हरिभूमि
हिसार-हांसी भूमि
रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

10 विधायक आवास के बाहर रातभर धरने पर बैठी रही नर्सिंग छात्राएं

10 जेएसएल ने भारत का पहला जंग-रोधी स्टेनलेस स्टील नमक कंटेनर...

खबर संक्षेप

हकृवि में चार दिवसीय एक्वा उद्यम कार्यक्रम 16 से

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 16 से 19 फरवरी तक चार दिवसीय राष्ट्रीय मत्स्य उद्यमिता विकास कार्यक्रम एक्वा उद्यम 2026 का आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज) हैदराबाद, तेलंगाना के मत्स्य पालन नवाचार और स्टार्टअप हब (मैनेज-फिशहब) के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है जिसमें मत्स्य उद्यमिता, नवाचार, संवर्धन, शिक्षा और आजीविका को एकीकृत मंच प्रदान किया जाएगा।

मंगाली आकलान में खेल उत्सव मनाया

हिसार। आशा हाई स्कूल, मंगाली आकलान में खेल उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। खेल उत्सव में पहली से दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने खो-खो, ताइक्वांडो, रसाकस्सी, दौड़, बैलून और बोतल एक्टिविटी और क्विज कम्पटीशन में बढ़ चढक़र भाग लिया। इस अवसर पर स्कूल के मुख्याध्यापक महेन्द्र कौशिक, पीटीआई साहिल, पूजा, खुशबू व अन्य स्टाफ ने अपना योगदान दिया। इन खेलों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। सभी ने इस कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

5 छात्र इंटर्नशिप के लिए चयनित

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल के सौजन्य से आधार हेल्थ इंस्टीट्यूट, हिसार के ऑन-कैंपस इंटर्नशिप ड्राइव में विश्वविद्यालय के एमबीए कार्यक्रम के पांच विद्यार्थी अंतिम सेमेस्टर की इंटर्नशिप के लिए चयनित हुए हैं। चयनित विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने इस उपलब्धि पर गर्व जताया। प्लेसमेंट निदेशक डॉ. प्रताप सिंह ने बताया कि इंटर्नशिप ड्राइव में एमबीए व बीफार्म. के 12 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

बच्चों के लिए सब्जेक्टिव प्रदर्शन का आयोजन

हिसार। अर्बन एस्टेट स्थित विश्वास सीनियर सेकेंडरी स्कूल में नर्सरी से केजी तक के विद्यार्थियों के लिए एक भव्य सब्जेक्टिव प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में नन्हें-मुन्ने बच्चों ने विभिन्न शैक्षणिक विषयों से जुड़े आकर्षक और ज्ञानवर्धक मॉडल प्रस्तुत किए। बच्चों ने हिंदी और अंग्रेजी वर्णमाला, गणित, पर्यावरण एवं अन्य विषयों पर रंग-बिरंगे मॉडल बनाए। इन मॉडलों को तैयार करने में विद्यार्थियों के शिक्षकों ने भी उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाई।

25 लोगों के किए निशुल्क नेत्र ऑपरेशन

हिसार। दिव्यांग पुनर्वास केंद्र में पुलवामा शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करके निशुल्क नेत्र ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया। इसके उपरांत दिव्यांग केंद्र के आधुनिक ऑपरेशन थियेटर में आर्थिक रूप से कमजोर 25 जरूरतमंद व्यक्तियों की आंखों के सफेद मोतियाबिंद का सफलतापूर्वक ऑपरेशन किया गया। इसके साथ ही यथासंभव दवाइयां भी निःशुल्क प्रदान की गई।

अग्रवाल वैश्य समाज की सभा 7 मार्च को वृंदावन में

हिसार। अग्रवाल वैश्य समाज की प्रदेश स्तरीय आम सभा की बैठक आगामी 7 मार्च को भगवान श्रीकृष्ण की लीलाभूमि वृंदावन के दिल्ली श्रीधाम रुक्मणी विहार में आयोजित की जाएगी। अग्रवाल वैश्य समाज के जिलाध्यक्ष ललित बंसल ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला की अध्यक्षता में वृंदावन जैसे पावन तीर्थ स्थल पर आम सभा का आयोजन समाज की एकता, वैचारिक चिंतन और भविष्य की दिशा तय करने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आधुनिक कृषि तकनीकों, नवीनतम मशीनरी, डिजिटल समाधान और स्मार्ट खेती के उन्नत मॉडलों का प्रभावी मंच बनकर उभरा कृषि दर्शन एक्सपो

आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग से श्रम लागत में कमी और उत्पादन में वृद्धि संभव : रणबीर गंगवा

- उत्तरी क्षेत्र कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान में कृषि दर्शन एक्सपो का शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

उत्तरी क्षेत्र कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान (टीटीसी) में "कृषि दर्शन एक्सपो 2026" का शुभारंभ शनिवार को हर्षोल्लास और उत्साह के साथ हुआ। तीन दिन तक चलने वाली कृषि प्रदर्शनी में देश-प्रदेश की अग्रणी कृषि मशीनरी निर्माता कंपनियां, स्टार्टअप, कृषि वैज्ञानिक, प्रगतिशील किसान तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े उद्योग प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। यह एक्सपो आधुनिक कृषि तकनीकों, नवीनतम मशीनरी, डिजिटल समाधान और स्मार्ट खेती के उन्नत मॉडलों का एक प्रभावी मंच बनकर उभरा है।

प्रदर्शनी के शुभारंभ अवसर पर प्रदेश के लोक निर्माण एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा कि ऐसे आयोजन किसानों को पारंपरिक खेती से आगे बढ़ाकर तकनीक आधारित खेती की ओर प्रेरित करते हैं। उन्होंने कहा कि आधुनिक कृषि यंत्रों और डिजिटल तकनीकों के उपयोग से श्रम लागत में कमी, समय की बचत और उत्पादन में वृद्धि संभव है। उन्होंने कहा कि कृषि दर्शन एक्सपो 2026 किसानों को नई सोच, नई तकनीक और नए अवसरों से जोड़ने का सशक्त माध्यम है।

हिसार। तीन दिवसीय कृषि प्रदर्शनी में उमड़ी भीड़ ।

हिसार। कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा को स्मृति चिन्ह देते टीटीसी के निदेशक डॉ. मुकेश जैन।

हिसार। नए उत्पाद का अनावरण राज्यसभा सदस्य सुभाष बराला

अब कीटों को भगाने के लिए स्प्रे की नहीं पड़ेगी जरूरत

कृषि प्रदर्शनी में गमट्री को लेकर किसानों ने विशेष रूचि दिखाई और फ्री में ट्रायल भी किए। किसानों की फसल को कीड़े-मच्छर खा जाते थे जिससे बचने के लिए फसल में कई-कई बार स्प्रे करने पड़ते थे। उसी स्प्रे की वजह से फसलों में कैमिकल ज्यादा पड़ता है और वो कहीं न कहीं हमारे स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालती है। हमारी सेहत अच्छी रहें और किसानों की फसल भी बर्बाद न हो इसी समस्या से निजात पाने के लिए अब आ गया है गमट्री। यह एक कागज की अलग-अलग रंग की शीट होती है जिस पर गलू बेस है, जिसे खेत में डंडे के सहारे जगह-जगह पर लगाया जा सकता है। रंग से आकर्षित होकर इस पर कीट पतंगे आ कर चिपक जाते है और उस ट्रैप में फंस जाते है। इस शीट का गलू 3 से 4 महीने तक रहता है। एक एकड़ में इसकी लागत 500 रुपये से भी कम की आती है। बार-बार स्प्रे करने की समस्या से निजात पाया जा सकता है और स्प्रै से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है।

जेके ने किया टायर 'श्रेष्ठ प्लस' लॉन्च

भारत की अग्रणी टायर निर्माता कंपनी जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने आयोजित कृषि दर्शन एक्सपो 2026 के दौरान अपना नया प्रीमियम फार्म टायर 'श्रेष्ठ प्लस' लॉन्च किया। इस नए उत्पाद का अनावरण इस नए उत्पाद का अनावरण राज्यसभा सदस्य, सुभाष बराला ने किया। इस अवसर पर जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज के निदेशक बिक्री एवं विपणन, श्रीनिवासु अल्लाफन तथा कंपनी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे। यह लॉन्च जेके टायर के प्रीमियम फार्म टायर पोर्टफोलियो का विस्तार करता है और आधुनिक कृषि जरूरतों के लिए नवाचार को आगे बढ़ाने की कंपनी की प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है।

'खाकी' के साये में चल रहा पवन उर्फ मूसा का इलाज

लूट, हत्या, डकैती सहित मूसा पर 25 मामले दर्ज

- घेराबंदी के दौरान बदमाश ने पुलिस पर चलाई गोली, जवाबी कार्रवाई में धरा गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

सदर क्षेत्र के गांव पीरांवाली के पास पुलिस एनकाउंटर में घायल हुए बदमाश पवन उर्फ मूसा का पुलिस सुरक्षा में इलाज चल रहा है। पवन के पैर में घुटने के नीचे गोली लगी है। फिलहाल उसका इलाज जारी है और चिकित्सकों के अनुसार अभी वह अनफिट है। पवन व उसके साथियों पर नकली साइबर टीम बनाकर मेडिकल छात्रों से लूट सहित हत्या, हत्या प्रयास, डकैती सहित लगभग 25 से अधिक मामले दर्ज है। पुलिस को आशंका है कि उसकी गिरफ्तारी से कई मामलों का खुलासा हो सकता है। पवन उर्फ मूसा कुछ समय पहले ही जेल से बाहर आया बताते हैं।

सीआईए वन टीम ने शुक्रवार रात को पीरांवाली के पास मुठभेड़ के बाद बदमाश पवन उर्फ मूसा को काबू किया था। सीआईए टीम को सूचना मिली थी कि बदमाश पवन उर्फ मूसा पीरावली फ्लाइओवर के पास आ रहा है। इसके बाद टीम मौके पर पहुंची और उसे घेर लिया। खुद को घिरता देख बदमाश ने पुलिस पर फायर कर दिया। जवाबी कार्रवाई करते हुए सीआईए टीम ने भी फायरिंग की। इस दौरान एक गोली बदमाश के पैर में लगी, जिससे वह घायल हो गया। उस पर 25 से अधिक केस दर्ज हैं।

हिसार। नागरिक अस्पताल में पुलिस के साये में उपचाराधीन पवन उर्फ मूसा।

मेडिकल छात्रों से की लूट

डीएसपी कर्मजीत ने बताया कि पवन उर्फ मूसा ने अपने साथियों के साथ मिलकर हिसार के सेक्टर-14 में 29 अक्टूबर की रात करीब दो बजे बीएएमएस डॉक्टरों से लूट की थी। उन्होंने खुद को गुरुग्राम साइबर क्राइम का अधिकारी बताया। डॉक्टरों को धमकाकर 2.5 लाख रुपए बैंक अकाउंट में ट्रांसफर करवा लिए थे। इस मामले में पुलिस उसकी कई दिनों से तलाश कर रही थी। डीएसपी के अनुसार जमानत मिलने के बाद वह कुछ समय पहले ही जेल से बाहर आया था और आते ही फिर से वारदातें शुरू कर दी।

चिट्टे की लत की चर्चा

पुलिस के अनुसार पवन उर्फ मूसा को चिट्टे के नशे की भी लत थी। संभव है कि वह पीरांवाली क्षेत्र के वारदात करने के अलावा चिट्टे का नशा लेने आया हो। इसी बीच घेराबंदी के दौरान मूसा और पुलिस टीम के बीच एनकाउंटर हो गया। पुलिस के मुताबिक मूसा ने पुलिस टीम देखते ही फायरिंग कर दी। इस गोलीबारी में पीएसआई नवीन कुमार बाल-बाल बचे। उनकी बुलेटप्रूफ जैकेट पर हार्ट साइड में एक गोली लगी। इसके बाद जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने बदमाश की ओर फायरिंग की, जिसमें एक गोली मूसा के पैर में लगी। पुलिस ने बदमाश को घायल हालत में दबोच लिया और नागरिक अस्पताल में भर्ती करवाया। डीएसपी कर्मजीत ने बताया कि आरोपी के पास से 32 बोर की पिस्टल, एक मैग्जीन और 4 जिंदा कारतूस बरामद हुए हैं।

बरवाला लूट केस में शामिल था मुसा

पीएसआई नवीन कुमार ने बताया कि शुक्रवार देर रात मुखबिर से सूचना मिली कि मोठ लुहारी निवासी पवन उर्फ मूसा पीरांवाली गांव में किसी वारदात की योजना बना रहा है। मूसा बीते अक्टूबर में हिसार के सेक्टर-14 और बरवाला में हुई लूट में शामिल था। सूचना मिलते ही सीआईए स्टाफ ने दो टीमें गठित की। इसके बाद एनएच-52 पुल बगला रोड के पास मूसा की घेराबंदी की। मूसा वहां से गुजर रहा था। पुलिस ने जैसे ही उसे रुकने का इशारा किया तो उसने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी।

पीएसआई नवीन पर चलाई गोली

आरोपी द्वारा की गई फायरिंग में एक गोली पीएसआई नवीन की बुलेटप्रूफ जैकेट पर लगी। इसके बाद पुलिस टीम ने अलग-अलग साइड से मूसा को घेरने का प्लान बनाया। एक पुलिसकर्मी ने मूसा के पैर में गोली मारकर उसे पकड़ लिया।

अभी अनफिट, बाद में बयान दर्ज करेगी पुलिस : प्रवक्ता

पुलिस प्रवक्ता का कहना है कि पवन उर्फ मूसा का इलाज चल रहा है। चिकित्सकों ने अभी उसे अनफिट बताया है, जिसके चलते उसके बयान दर्ज नहीं हो सके हैं। जब वह बयान देने की हालत में होगा तो बयान दर्ज करके पुलिस आगामी कार्रवाई करेगी।

जल्द समाधान का दिया आश्वासन

अंडरपास की मांग को सांसद कुमारी सैलजा का समर्थन

सड़क से सदन तक सरकार की गलत नीतियों का विरोध जारी रहेगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ उकलाना

पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा से सांसद कुमारी सैलजा ने शनिवार को उकलाना में प्रस्तावित अंडरपास की मांग को लेकर चल रहे धरने को अपना समर्थन दिया। कुमारी सैलजा ने आंदोलनकारियों से मुलाकात कर उनकी मांगों को जायज बताया।

उन्होंने कहा कि अंडरपास की मांग क्षेत्र की जनता की जरूरत है और ऐसी जायज मांग की अनदेखी करना सरकार को महंगा पड़ सकता है। सरकार का दायित्व है कि वह आमजन के हितों की रक्षा करे। सैलजा ने आश्वासन दिया कि सोमवार को संबंधित अधिकारियों से मामले की प्रगति रिपोर्ट ली जाएगी और स्थिति स्पष्ट होने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। सांसद सैलजा ने कहा कि विपक्ष का दायित्व है कि वह जनता की आवाज बने। चाहे सदन हो या सड़क, सरकार की गलत नीतियों का विरोध करना हमारा कर्तव्य है और कांग्रेस यह जिम्मेदारी निभा रही है। पेंशन और राशन कार्ड के मुद्दे पर बोलते हुए सैलजा ने कहा कि चुनाव के समय बड़े-बड़े वादे किए जाते हैं, लेकिन बाद में पात्र लोगों के राशन कार्ड काट दिए जाते हैं और पेंशन को विभिन्न शर्तों से जोड़कर जरूरतमंदों को वंचित किया जाता है।

उकलाना। धरने को संबोधित करती सांसद कुमारी सैलजा।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर कांग्रेस लीगल डिपार्टमेंट के स्टेट चेयरमैन एडवोकेट लाल बहादुर खोवाल, धरना संयोजक सरदार कपूर सिंह, बलजीत नंबरदार, वीरभान सिंह, वीरेंद्र सेलवाल, नरेश पहलवान, सुरेश गर्ग, सुरेंद्र सेलवाल, राजेश भूटानी, भगत सिंह, हरिकृष्ण प्रभुवाला, कमल सिंगला, सरदार सातवंत सिंह, लखबीर सिंह, कर्ण सिंह लितानी आदि मौजूद रहे।

खेत में से लाखों की चार भैंस चोरी

- वारदात को अंजाम देने से पहले चोरों ने किसान के कमरे के बाहर लगाई कुंडी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बरवाला

बीती रात्रि हिसार रोड रेलवे ब्रिज की रॉन्ग साइड में स्थित एक किसान के खेत में से अज्ञात चोर लाखों रुपए की चार दुधारू भैंसों की चोरी करके फरार हो गए। पुलिस ने सूचना पाते ही मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण करके कार्रवाई आरंभ कर दी है। वार्ड नंबर 3 निवासी किसान बलराज ने बताया कि वह हिसार रोड रेलवे ब्रिज की रॉन्ग साइड में स्थित अपने खेत में बने मकान के एक कमरे में सो रहा था और साथ लगते पशुओं के लिए बने शेड में पशु बंधे हुए थे। शुक्रवार देर रात्रि को अज्ञात चोरों ने मौके का फायदा उठाते हुए किसान बलराज के कमरे को बाहर से कुंडी लगाकर बंद कर दिया और पशुओं को खोलने लगे तो कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया। किसान बलराज की आंख खुली तो पाया कि कमरे की बाहर से कुंडी लगी हुई है तो परिजनों को फोन करके मौके पर बुलाया और कमरे को खुलवाया तो पाया कि पशुओं के लिए बने शेड में बंधे पशुओं में से चार भैंसों की चोरी हुई पाई गई। चोरी हुई चारों भैंसों की कीमत लगभग चार लाख रुपये बताई जा रही है।

बरवाला। चोरी की घटना के बारे में जानकारी देते किसान बलराज।

डेढ़ साल पहले भी हुई थी तीन भैंस चोरी

इससे पूर्व भी इसी किसान बलराज की डेढ़ वर्ष पूर्व 22 अगस्त, 2024 को भी अज्ञात चोर तीन भैंसों की चोरी करके फरार हो गए थे। सीसीटीवी फुटेज देखे के बाद भी पुलिस उस चोरी की घटना का भी अभी तक कोई सुराग नहीं लगा पाई है।

साइबर क्राइम के प्रति ग्रामीणों को किया जागरूक

हांसी। पुलिस अधीक्षक अमित यशवर्धन ने शनिवार को ग्रामीण भ्रमण कार्यक्रम के दौरान सोरखी गांव में ग्रामीणों से संवाद करते हुए उनकी समस्याएं सुनीं तथा संबंधित अधिकारियों को त्वरित समाधान के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान पुलिस अधीक्षक ने ग्रामीणों को साइबर क्राइम से बचाव, नशा मुक्त समाज के निर्माण तथा सड़क सुरक्षा नियमों के पालन के बारे में जागरूक करते हुए कहा कि किसी भी प्रकार की साइबर ठगी, संदिग्ध गतिविधि या अपराध की सूचना तुरंत पुलिस को दें ताकि समय रहते कार्रवाई की जा सके। उन्होंने युवाओं को नशे से दूर रहने और समाज को सुरक्षित बनाने में सहयोग करने की अपील भी की। इसी कड़ी में डीएसपी रविन्द्र सांगवान ने गढ़ी गांव में ग्रामीणों को तथा डीएसपी विनोद शंकर ने शहर के वार्ड नंबर दो के लोगों को साइबर अपराध के बारे में दी जानकारी।

कृषि विशेषज्ञों ने दो दिन मंथन के बाद जारी की आठ सिफारिशें

कृषि तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने का किया आह्वान

- हकृवि में दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का हुआ समापन
- चुनौतियों से निपटने के लिए शोध एवं विस्तार का बेहतर समन्वय ज़रुरी : प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानवीकी महाविद्यालय के सभागार में विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2026 का समापन हुआ। कार्यशाला में कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा विस्तार विशेषज्ञों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में प्रदेश में उन्नत कृषि तकनीकों, नवीनतम अनुसंधान उपलब्धियों, उन्नत किस्मों के बीजों, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन तथा फसल विविधीकरण को प्रभावी ढंग से किसानों तक पहुंचाने का आह्वान किया। उन्होंने फसल उत्पादन, उन्नत बीज प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, कीट रोग नियंत्रण, जल संरक्षण तकनीक, कृषि में मशीनीकरण तथा जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष में कृषि प्रबंधन जैसी महत्वपूर्ण तकनीकों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने पर बल दिया है, ताकि छोटे एवं सीमांत किसान भी इन्हें अपनाकर अपने कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी कर सकें।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. रामप्रताप सिहाग ने जागरूकता बढ़ाने के लिए किसान प्रशिक्षण, कृषि मेला और फील्ड डेमो आयोजित करने का सुझाव दिया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रमेश कुमार यादव ने कहा कि हकृवि द्वारा आयोजित कृषि वैज्ञानिकों व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों की कार्यशाला में विभिन्न छह सत्र आयोजित किए गए जिनमें धान, मक्का, दलहनी फसलें, तिलहन, वानिकी, शुष्क खेती एवं चारा फसलें शामिल हैं।

हिसार। कार्यशाला के दौरान मंच पर उपस्थित अधिकारीगण

कार्यशाला में स्वीकृत 8 सिफारिशें

- एचकेआ 49: यह एक धान की एक अर्ध बोन्नी, जल्दी पकने वाली और ज़्यादा पैदावार देने वाली किस्म है। यह किस्म लगभग 120 दिनों में पक जाती है। इस किस्म की औसत पैदावार 32 क्विंटल/एकड़ है और उत्पादन क्षमता 38 क्विंटल/एकड़ है।
- मूंगफली की जीएनएच 804 : इस किस्म को हरियाणा राज्य के सिंचित क्षेत्र में समय पर बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। इसकी औसत उपज 10-12 क्विंटल प्रति एकड़ है। इसमे तेल की मात्रा 52 प्रतिशत होती है।
- सीएसवी 64एफ : चारा ज्वार की इस किस्म को उत्तर भारत के सभी चारा उत्पादक क्षेत्रों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की पैदावार 185-190 क्विंटल/एकड है।
- आरसीएच 846 बीजी 2 : बीटी कपास की संकर किस्म हरियाणा में समय पर बिजाई के लिए अनुमोदित की गई है। इस किस्म की अवधि 150-160 दिन है।
- आरसीएच 951 बीजी 2: बीटी कपास की संकर किस्म हरियाणा में समय पर बिजाई के लिए अनुमोदित की गई है। इस किस्म की अवधि 160-170 दिन है।
- रघुवीर बीजी 2 : बीटी कपास की संकर किस्म हरियाणा में समय पर बिजाई के लिए अनुमोदित की गई है। इस किस्म की अवधि 150-160 दिन है।
- दक्षिण-पश्चिम हरियाणा क्षेत्र में मूंग की फसल की अच्छी पैदावार के लिए दो किलो पोटेशियम नाइट्रेट (13-0-45) का 200 लीटर पानी में घोल बनाकर दो छिडक़ाव फूल निकलने और फलियां बनते समय किए जाने चाहिए।
- हरियाणा में ग्रीष्मकालीन मूंग की बिजाई मार्च के दूसरे पखवाड़े से अप्रैल के प्रथम पखवाड़े तक कर सकते है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

इस समय सोना निवेश का बढ़िया विकल्प बनकर उभर रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स यानी युवा भारतीयों का सोने पर भरोसा मजबूत बना हुआ है, लेकिन इसे खरीदने का तरीका धीरे-धीरे बदल रहा है। स्मिटन पल्सएआई के सर्वे में सामने आया है कि सोने की खरीद अब अधिक व्यक्तिगत और छोटी रकम/मात्रा में होने लगी है। 18-39 वर्ष के 5,000 उपभोक्ताओं पर आधारित इस अध्ययन के अनुसार पारंपरिक, परिवार-केंद्रित खरीदारी की जगह अब तर्क-आधारित और व्यक्तिगत फैसलों का महत्व बढ़ रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स सोने की खरीद को अब शादी-समारोह से आगे बढ़कर व्यक्तिगत माइलस्टोन और पहली सैलरी जैसे शुरुआती निवेश के रूप में देख रहे हैं।

सुरक्षा के मामले में पहली पसंद

आधुनिक निवेश विकल्पों की बढ़ती पहुंच के बावजूद युवा भारतीयों के लिए सोना अब भी सबसे भरोसेमंद निवेश बना हुआ है। सर्वे के अनुसार यदि आज 25,000 रुपये निवेश करने हों तो 61.9% उत्तरदाता सोने को चुनेंगे। यह आंकड़ा म्यूचुअल फंड (16.6%), फिक्स्ड डिपॉजिट (13%), शेयर बाजार (6.6%) और क्रिप्टो (1.9%) से काफी आगे है। आर्थिक अनिश्चितता के समय भी सोने पर भरोसा कायम है। 65.7% लोगों ने कहा कि बैंक बचत, म्यूचुअल फंड या इक्विटी की तुलना में सोना उन्हें सबसे सुरक्षित विकल्प लगता है। यह ट्रेंड दर्शाता है कि जेन जी और मिलेनियल्स दोनों के लिए सोना अब भी वित्तीय सुरक्षा का प्रमुख सहारा बना हुआ है।

छोटी खरीदारी बन रही नया ट्रेंड

सर्वे से स्पष्ट संकेत मिलता है कि अब सोने की बड़ी और कम अंतराल वाली खरीदारी से हटकर छोटी और नियमित खरीदारी का रुझान तेजी से बढ़ रहा है। हाल की 61.9% खरीद 5 ग्राम से कम की रही, जिसमें 27.5% लोगों ने 2 ग्राम से कम और 34.4% ने 2 से 5 ग्राम के बीच सोना खरीदा। अब 42% परिवार समय-समय पर छोटी मात्रा में सोना खरीदना पसंद कर रहे हैं, जबकि 58% अभी भी एकमुश्त और अवसर आधारित खरीद करते हैं।

24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

जेन जी और मिलेनियल्स की पहली पसंद बना सोना

परिवार की भूमिका भी महत्वपूर्ण

निवेश के मामले में परिवार की भूमिका अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन सोने की खरीद के फैसले अब तेजी से व्यक्तिगत होते जा रहे हैं। सर्वे के मुताबिक 66.7% उत्तरदाताओं ने कहा कि आज सोना खरीदना मुख्य रूप से व्यक्तिगत और स्वयं प्रेरित निर्णय बन चुका है, न कि केवल पारिवारिक प्रभाव से लिया गया फैसला। 42.3% लोगों ने बताया कि उनके घर में हाल की सोने की खरीद की पहल उन्होंने खुद की, जबकि 40% ने माता-पिता या बड़े परिवार के सदस्यों को इसका श्रेय दिया। यह बदलाव पीढ़ियों के बीच स्पष्ट अंतर को दिखाता है। जेन जी अब कब और कैसे सोना खरीदना है, इसका फैसला खुद लेने में अधिक आत्मविश्वास दिखा रहे हैं और इसे व्यक्तिगत वित्तीय निर्णय मानते हैं। वहीं, मिलेनियल्स अब भी गोल्ड को परिवार की योजना और दीर्घकालिक सुरक्षा के नजरिए से देखते हैं, जहां खरीदारी सामूहिक प्राथमिकताओं से प्रभावित रहती है।

अब शादियों तक सीमित नहीं

दिलचस्प बात यह है कि पहली बार सोना खरीदना अब केवल शादी जैसे अवसरों तक सीमित नहीं रहा। 24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

सोने की खरीद में डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग बढ़ा है। इसके बावजूद सोने की खरीदारी में अभी भी पारंपरिक चैनल्स पर भरोसा अधिक है। सर्वे के अनुसार, 38.3% लोग सबसे अधिक सोना बड़ी ब्रांडेड ज्वेलरी चेन से खरीदते हैं, जबकि 34.7% उपभोक्ता स्थानीय ज्वैलर पर भरोसा करते हैं। इसके विपरीत, केवल 5.2% लोग ही ऑनलाइन प्लेटफॉर्म या ऐप के जरिए सोना खरीद रहे हैं। खरीद से जुड़ी चिंताओं में शुद्धता और प्रामाणिकता सबसे बड़ी चिंता के रूप में सामने आई, जिसे 49.4% उत्तरदाताओं ने प्रमुख कारण बताया।

खरीद के बाद पछतावा भी बड़ा संकेत

सर्वे की सबसे महत्वपूर्ण बात यह सामने आई कि सोना खरीदने के बाद बड़ी संख्या में युवा उपभोक्ता असमंजस या पछतावा महसूस करते हैं। करीब 67.1% उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें अक्सर या कभी-कभी सोना खरीदने के बाद पछतावा हुआ है। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह खरीदी गई कीमत (38.9%) रही, जबकि 33.5% लोगों ने ज्वैलरी, सिक्के या डिजिटल गोल्ड जैसे फॉर्मेट को लेकर भ्रम को कारण बताया। वहीं 18.8% ने पर्याप्त जानकारी के अभाव को जिम्मेदार ठहराया। यह ट्रेंड दिखाता है कि सोने पर भरोसा मजबूत है, लेकिन खरीद प्रक्रिया को लेकर युवाओं का आत्मविश्वास अभी भी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है।

भविष्य में सोना खरीदने का इरादा

लोग भविष्य में भी खूब सोना खरीदना चाहते हैं। इस सर्वे में यह भी सामने आया कि भविष्य में सोना खरीदने का इरादा बहुत मजबूत है। 52.7% उत्तरदाता अगले 12 से 24 महीनों में सोना खरीदने के लिए "बहुत संभावना" दिखाते हैं। कुल मिलाकर सोने का स्थान युवा भारतीयों के बीच अब भी अडिग है, हालांकि खरीदारी के तरीके बदल रहे हैं। छोटे निवेश, व्यक्तिगत निर्णय और पारंपरिक खरीदारी चैनल्स में भरोसा दर्शाता है कि सोना का आकर्षण मजबूत है और आने वाले समय में भी यह सुरक्षित निवेश के रूप में रहेगा।

महंगाई के दौर में बच्चों के लिए बनाएं फंड

उच्च शिक्षा के लिए करें मजबूत प्लानिंग

तैयारी
बिजनेस डेस्क

- तेजी से महंगी हो रही पढ़ाई, अभी नहीं संभले तो पड़ेगा भारी
- एसआईपी समेत कई निवेश विकल्पों के बारे में सोचना होगा
- एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति बनानी होगी

आज के दौर में शिक्षा केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी बन चुकी है, लेकिन इसके साथ स्कूल और कॉलेज की फीस सामान्य महंगाई दर से कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। इंटरनेशनल बोर्ड, प्रोफेशनल कोर्स, विदेश में पढ़ाई, हॉस्टल और रहने-खाने का खर्च ये सभी मिलकर उच्च शिक्षा को बेहद महंगा बना देते हैं। ऐसे में माता-पिता के लिए यह जरूरी हो गया है कि वे समय रहते अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए व्यवस्थित और दीर्घकालिक वित्तीय योजना बनाएं। अक्सर देखा जाता है कि माता-पिता एक अनुमानित रकम तय कर लेते हैं और हर महीने एसआईपी शुरू कर देते हैं। यह एक अच्छा कदम है, लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल एसआईपी पर निर्भर रहना पर्याप्त है? बदलते आर्थिक हालात और शिक्षा महंगाई को देखते हुए जवाब है नहीं। जरूरत है एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति की।

जल्दी शुरुआत ही सबसे बड़ा फायदा

उच्च शिक्षा की योजना में समय सबसे महत्वपूर्ण कारक है। यदि बच्चा छोटा है और आप अभी से निवेश शुरू करते हैं, तो कंपाउंडिंग का लाभ कई गुना बढ़ जाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आप 10–15 साल तक नियमित एसआईपी करते हैं, तो छोटी-छोटी मासिक बचत भी बड़ा फंड बना सकती है। देर से शुरुआत करने पर आपको अधिक रकम निवेश करनी पड़ सकती है, जिससे घरेलू बजट पर दबाव बढ़ सकता है।

एक निवेश विकल्प पर निर्भर न रहें

अक्सर लोग पूरे शिक्षा फंड को इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश कर देते हैं और फीस भरने तक उसे वहीं रखते हैं। लेकिन यदि फीस के समय बाजार में गिरावट आ जाए, तो आपके फंड की वैल्यू घट सकती है। इसलिए जरूरी है कि जैसे-जैसे फीस का समय नजदीक आए, निवेश को सुरक्षित विकल्पों में शिफ्ट किया जाए। उदाहरण के लिए लक्ष्य से 3–4 साल पहले धीरे-धीरे डेट फंड या एफडी में ट्रांसफर करें। अंतिम 1–2 साल में जोखिम बहुत कम कर दें और पैसा लिक्विड या सुरक्षित साधनों में रखें। यह रणनीति आपको बाजार के उतार-चढ़ाव से बचाती है।

शिक्षा महंगाई का सही अनुमान लगाएं

भारत में शिक्षा महंगाई दर सामान्य महंगाई से अधिक, लगभग 8–12% तक मानी जाती है। यदि आज किसी कोर्स की फीस 10 लाख रुपये है, तो 10 साल बाद वही कोर्स 20–25 लाख रुपये तक हो सकता है। इसलिए भविष्य की लागत का अनुमान लगाते समय महंगाई को शामिल करना जरूरी है। केवल वर्तमान फीस देखकर योजना बनाना पर्याप्त नहीं है।

अन्य खर्चों को भी जोड़ें

अक्सर माता-पिता केवल ट्यूशन फीस को ध्यान में रखकर फंड बनाते हैं, जबकि वास्तविक खर्च इससे कहीं अधिक होता है। विशेषकर विदेश में पढ़ाई के मामले में रहने और खाने का खर्च, हेल्थ इंश्योरेंस, यात्रा खर्च, लैपटॉप और अन्य गैजेट्स, एप्लिकेशन फीस, इंटर्नशिप या प्रोजेक्ट खर्च इन सभी खर्चों को जोड़कर ही वास्तविक लक्ष्य तय करें। विदेश में पढ़ाई का खर्च तो डॉलर या अन्य विदेशी मुद्रा में होने के कारण और भी बढ़ सकता है।

एजुकेशन लोन से न घबराएं

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को नकारात्मक नजर से देखते हैं, लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। यदि समझदारी से लिया जाए, तो एजुकेशन लोन रिटायरमेंट सेविंग्स को बचाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास शिक्षा और रिटायरमेंट दोनों के लिए सीमित फंड है, तो शिक्षा के लिए आंशिक लोन लेकर आप अपने रिटायरमेंट कॉर्पस को सुरक्षित रख सकते हैं। इसके अलावा, एजुकेशन लोन पर टैक्स लाभ भी मिलता है और पढ़ाई पूरी होने के बाद बच्चे खुद इसे चुकाने में योगदान दे सकते हैं।

रिटायरमेंट से समझौता न करें

बच्चों की पढ़ाई महत्वपूर्ण है, लेकिन अपनी रिटायरमेंट सुरक्षा को नजरअंदाज करना भविष्य में आर्थिक संकट पैदा कर सकता है। शिक्षा के लिए आप लोन ले सकते हैं, लेकिन रिटायरमेंट के लिए नहीं। इसलिए दोनों लक्ष्यों में संतुलन बनाना जरूरी है।

नियमित समीक्षा करें

हर साल अपनी योजना की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है, तो **SIP** की राशि भी बढ़ाएं। अगर लक्ष्य की लागत बदलती है या बच्चे की रुचि अलग दिशा में जाती है, तो योजना में संशोधन करें।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए पहले से तैयारी करना अनिवार्य हो गया है। केवल बचत नहीं, बल्कि स्मार्ट निवेश, जोखिम प्रबंधन और समय पर समीक्षा ही मजबूत शिक्षा फंड का आधार बनते हैं। जल्दी शुरुआत, विविध निवेश, महंगाई का सही अनुमान और जरूरत पड़ने पर एजुकेशन लोन ये सभी कदम मिलकर आपके बच्चे के सपनों को साकार कर सकते हैं।

प्राइवेट नौकरी वाले जान लें अहम टिप्स

आर्थिक रूप से रहेंगे मजबूत

- अपने वेतन का करीब 20 फीसदी शुरू से ही निवेश करें
- अपना बजट बनाएं, लक्ष्य तय करें और गैरजरूरी खर्चों से बचें
- सैलरी 10% बढ़ती है, तो कम से कम 5% अतिरिक्त निवेश करें
- व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस जरूर लें, यह बीमारी में काम आएगा

सुझाव
बिजनेस डेस्क

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी करने वाले लाखों युवाओं के लिए करियर की शुरुआत उत्साह और सपनों से भरी होती है। अच्छी सैलरी, कॉर्पोरेट लाइफस्टाइल और तेजी से बढ़ते अवसर आकर्षित करते हैं, लेकिन इस चमक-दमक के पीछे एक सच्चाई भी है प्राइवेट नौकरी में सरकारी कर्मचारियों जैसी पेंशन, स्थायी सुरक्षा या व्यापक सामाजिक लाभ अक्सर उपलब्ध नहीं होते। ऐसे में यदि वित्तीय योजना मजबूत न हो, तो भविष्य असुरक्षित हो सकता है। करियर की शुरुआत में की गई छोटी वित्तीय गलतियां समय के साथ बड़ी समस्या बन जाती हैं। इसलिए जरूरी है कि शुरुआत से ही सतर्क रहें और कुछ सामान्य लेकिन गंभीर वित्तीय भूलों से बचें।

अनियंत्रित जीवनशैली की शुरुआत

अक्सर युवा नौकरी लगते ही खर्च की आजादी का आनंद लेने लगते हैं। सैलरी आते ही किराया, घूमना-फिरना, गैजेट्स और ऑनलाइन शॉपिंग पर पैसा खर्च हो जाता है। लेकिन यदि आय और खर्च का स्पष्ट बजट न हो, तो बचत पीछे छूट जाती है। वित्तीय स्थिरता की पहली शर्त है बजट बनाना। 50-30-20 फॉर्मूला एक आसान तरीका है। इसमें 50% आय जरूरी खर्चों के लिए, 30% लाइफस्टाइल और शौक के लिए तथा 20% बचत और निवेश के लिए रखा जाता है। समस्या तब होती है जब लोग बचत वाले हिस्से को टाल देते हैं। कई बार दिखावे या सामाजिक दबाव में जरूरत से ज्यादा खर्च कर बैठते हैं। याद रखें, कमाई से ज्यादा जरूरी है पैसे का प्रबंधन।

वेतन बढ़ा, बचत नहीं

प्राइवेट सेक्टर में समय-समय पर इंक्रीमेंट और प्रमोशन मिलते हैं। लेकिन अक्सर देखा गया है कि वेतन बढ़ते ही खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ जाता है। इसे लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन कहते हैं। नई कार, महंगा मोबाइल, ब्रांडेड कपड़े, बार-बार ट्रैवल ये सब बढ़ती आय के साथ जुड़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि बचत की दर स्थिर ही रहती है या घट जाती है। समझदारी यह है कि हर वेतन वृद्धि के साथ निवेश भी बढ़ाया जाए।

निवेश को टालना

अभी तो करियर की शुरुआत है, बाद में निवेश करेंगे यह सोच सबसे खतरनाक है। निवेश में समय सबसे बड़ा हथियार है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, उतना ही कंपाउंडिंग का फायदा मिलेगा। मान लीजिए कोई व्यक्ति 25 साल की उम्र से हर महीने 5,000 रुपये एसआईपी में निवेश करता है और दूसरा 35 साल की उम्र से 10,000 रुपये। लंबे समय में पहले व्यक्ति का फंड अधिक हो सकता है, क्योंकि उसे 10 साल का अतिरिक्त समय मिला। प्राइवेट नौकरी में पेंशन की गारंटी नहीं होती। इसलिए रिटायरमेंट फंड बनाना आपकी जिम्मेदारी है। म्यूचुअल फंड एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य लंबी अवधि के साधनों में नियमित निवेश जरूरी है।

इमरजेंसी फंड की अनदेखी

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी की स्थिरता सीमित हो सकती है। अचानक छंटनी, कंपनी बंद होना या व्यक्तिगत कारणों से नौकरी छोड़नी पड़ सकती है। ऐसे समय में यदि इमरजेंसी फंड न हो, तो आपको कर्ज लेना पड़ सकता है या निवेश तोड़ना पड़ सकता है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि रखें।

बीमा को हल्के में लेना

कई लोग सोचते हैं कि कंपनी द्वारा दिया गया ग्रुप हेल्थ इंश्योरेंस पर्याप्त है। लेकिन नौकरी बदलते ही यह सुविधा खत्म हो सकती है। इसलिए व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस लेना जरूरी है। इसके अलावा, यदि परिवार आप पर निर्भर है, तो टर्म लाइफ इंश्योरेंस अनिवार्य है। यह कम प्रीमियम में बड़ी सुरक्षा देता है।

कर्ज का गलत इस्तेमाल

क्रेडिट कार्ड का अत्यधिक उपयोग और पर्सनल लोन लेना भी बड़ी वित्तीय गलती है। 18% से 36% तक ब्याज दर आपकी बचत को खत्म कर सकती है। कर्ज लें तो केवल जरूरी जरूरतों के लिए, जैसे होम लोन।

अनुशासन ही असली सुरक्षा

प्राइवेट नौकरी में अवसर बहुत हैं, लेकिन जोखिम भी कम नहीं। यहां भविष्य की सुरक्षा आपके अपने हाथ में है। बजट बनाना, लाइफस्टाइल पर नियंत्रण, समय पर निवेश, पर्याप्त बीमा और इमरजेंसी फंड ये पांच स्तंभ आपकी आर्थिक मजबूती की नींव हैं। वहीं, आज का अनुशासन आपको आर्थिक स्वतंत्रता और मानसिक शांति दे सकता है।

शेयर बाजार की बदहाली से इक्विटी म्यूचुअल फंड में घटा निवेश

- गोल्ड ईटीएफ में निवेश 106% बढ़ा
- शेयर बाजार में इन दिनों खूब दिख रही उठापटक
- आम निवेशकों का सेंटिमेंट प्रभावित हुआ

जानकारी
बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में इन दिनों उठा-पटक का दौर चल रहा है। किसी दिन शेयर बाजार का सूचकांक कुलांचे भरते हुए ऊपर चढ़ जाता है तो किसी दिन जमीन पर लोटने लगता है। तभी तो इस साल के पहले महीने यानी जनवरी 2026 में इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश थोड़ा कम हुआ। स्थिति यह रही कि इस महीने गोल्ड ईटीएफ में इक्विटी म्यूचुअल फंड के मुकाबले ज्यादा निवेश हुआ।

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स ऑफ इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी महीने के दौरान इक्विटी म्यूचुल फंड्स में 24,028 करोड़ रुपये आए। इससे एक महीने पहले यानी दिसंबर 2025 के दौरान 28,054 करोड़ रुपये आए थे। मतलब कि इस महीने निवेश में 14% की कमी आई है। यदि साल दर साल के आधार पर देखें तो जनवरी 2025 की तुलना में इस साल जनवरी में यह गिरावट 39% रही है। पिछले साल जनवरी के दौरान इस फंड में 39,687 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था।

इक्विटी फंड्स में कौन पहली पसंद

जनवरी के दौरान अलग-अलग तरह के इक्विटी फंडों में, फ्लेक्सीकैप फंड निवेशकों की पहली पसंद बने रहे। इनमें सबसे ज्यादा 7,672 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद मिडकैप फंड में 3,185 करोड़ रुपये और लार्ज एंड मिड-कैप फंड में 3,181 करोड़ रुपये का निवेश आया। स्मॉलकैप फंड में 2,942 करोड़ रुपये आए, लेकिन ईएलएसएस फंड से निवेशकों ने 593 करोड़ रुपये निकाल लिए। अगर पिछले महीने से तुलना करें, तो फोकस्ड फंड में निवेश 47% बढ़ा। दिसंबर 2025 में इनमें 1,056 करोड़ रुपये आए थे, जो जनवरी 2026 में बढ़कर 1,556 करोड़ रुपये हो गए। लार्जकैप फंड और सेक्टोरल/थीमैटिक फंड में भी पिछले महीने की तुलना में क्रमशः 28% और 10% ज्यादा निवेश आया। वहीं, मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड में निवेश पिछले महीने के मुकाबले 24% और 23% घट गया।

डेट फंड का चला जादू

जनवरी 2026 के दौरान डेट फंड में 74,827 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह अच्छी खबर है क्योंकि पिछले दो महीनों (नवंबर और दिसंबर 2025) में डेट फंड से कुल 1.58 लाख करोड़ रुपये बाहर चले गए थे। पिछले साल जनवरी की तुलना में इस साल डेट फंड में निवेश 42% कम रहा, जब 1.28 लाख करोड़ रुपये आए थे। डेट फंड की 16 अलग-अलग श्रेणियों में से, ओवरनाइट फंड में सबसे ज्यादा 46,280 करोड़ रुपये का निवेश आया। वहीं, कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड से 11,472 करोड़ रुपये निकाल लिए गए। लिक्विड फंड में 30,681 करोड़ रुपये और मनी मार्केट फंड में 12,763 करोड़ रुपये का निवेश आया।

हाइब्रिड फंड में भी रौनक

बीते जनवरी महीने के दौरान हाइब्रिड फंड में 17,356 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 10,755 करोड़ रुपये की तुलना में 61% ज्यादा है। पिछले साल जनवरी 2025 की तुलना में यह आंकड़ा 98% बढ़ा है, जब 8,767 करोड़ रुपये का निवेश आया था। हाइब्रिड फंड की छह श्रेणियों में से, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड में सबसे ज्यादा 10,485 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद आर्बिट्रेज फंड में 3,293 करोड़ रुपये आए। आर्बिट्रेज फंड में तो पिछले महीने के मुकाबले निवेश में 2,507% की भारी बढ़ोतरी हुई, जो दिसंबर 2025 में सिर्फ 126 करोड़ रुपये था। हालांकि, इक्विटी सेविंग्स फंड और कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में पिछले महीने के मुकाबले क्रमशः 81% और 35% की गिरावट आई।

ईटीएफ में खूब हुआ निवेश

अन्य स्कीमों, जिनमें ईटीएफ और इंडेक्स फंड जैसे पैसिव फंड शामिल हैं, में जनवरी में 39,954 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 26,723 करोड़ रुपये से 50% ज्यादा है। गोल्ड ईटीएफ में तो सबसे ज्यादा 24,039 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो पिछले महीने के मुकाबले 106% ज्यादा है। हो सकता है कि सोने की कीमतों में तेज बढ़ोतरी की वजह से निवेशक इस ओर आकर्षित हुए। अन्य ईटीएफ में 15,005 करोड़ रुपये का निवेश आया। विदेशों में निवेश करने वाले फंड-ऑफ-फंड में भी भारी उछाल देखा गया।

चालीस की उम्र में कर रहे हैं रिटायरमेंट प्लानिंग तो अपना लें ये अहम टिप्स

इस उम्र में भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती हैं, अच्छी रणनीति बनाकर निवेश करेंगे तो नहीं होगी परेशानी, भविष्य सुरक्षित रहेगा।

शुरुआत
बिजनेस डेस्क

रिटायरमेंट प्लानिंग अक्सर लोग 50 की उम्र के बाद शुरू करने की सोचते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि 40 की उम्र वह मोड़ है, जहां से भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती है। यह उम्र आमतौर पर करियर का सबसे स्थिर और आय का सबसे मजबूत दौर होता है। आमदनी अपने शिखर की ओर बढ़ रही होती है, लेकिन साथ ही जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं। बच्चों की पढ़ाई, होम लोन की ईएमआई, माता-पिता की देखभाल और जीवनशैली से जुड़े खर्च। ऐसे में यदि आपने अब तक रिटायरमेंट के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा है, तो अब वक्त है इसे प्राथमिकता देने का। 40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग का मतलब है सीमित समय में अधिक प्रभावी रणनीति अपनाना। आपके पास अब 20–25 साल का कार्यकाल बचा हो सकता है। इस दौरान सही निवेश, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन से आप एक मजबूत रिटायरमेंट कॉर्पस तैयार कर सकते हैं। सबसे पहले अपनी आय, खर्च, ईएमआई, मौजूदा निवेश और बीमा की स्थिति को स्पष्ट रूप से समझें। हर महीने कितना पैसा बचता है और कितना खर्च होता है, इसका विस्तृत विश्लेषण करें। इसके साथ ही महंगाई दर, भविष्य के मेडिकल खर्च और रिटायरमेंट के बाद की जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए यह अनुमान लगाएं कि आपको कितनी रकम की जरूरत होगी। विशेषज्ञ मानते हैं कि रिटायरमेंट के बाद भी वर्तमान खर्च का कम से कम 70–80% हर महीने चाहिए होगा।

सबसे पहले आय, खर्च, ईएमआई व निवेश की स्थिति समझें

रिटायरमेंट को प्राथमिकता बनाएं

अक्सर लोग बच्चों की पढ़ाई या घर खरीदने को प्राथमिकता देते हैं और रिटायरमेंट को टालते रहते हैं। लेकिन याद रखें, बच्चों को शिक्षा के लिए लोन मिल सकता है, रिटायरमेंट के लिए नहीं। ईपीएफ, पीपीएफ, एनपीएस और म्यूचुअल फंड एसआईपी जैसे साधनों में नियमित निवेश बढ़ाएं। कोशिश करें कि अपनी आय का कम से कम 15–25% हिस्सा रिटायरमेंट के लिए सुरक्षित रखें। यदि संभव हो तो हर साल आय बढ़ने के साथ निवेश राशि भी बढ़ाएं।

महंगे कर्ज से जल्दी छुटकारा पाएं

क्रेडिट कार्ड और पर्सनल लोन पर 12% से 24% तक ब्याज देना आपकी संपत्ति निर्माण की क्षमता को कमजोर करता है। ऐसे कर्ज को प्राथमिकता से खत्म करें। होम लोन अपेक्षाकृत सस्ता होता है, लेकिन यदि अतिरिक्त राशि उपलब्ध हो तो प्री-पेमेंट जरूर करें। कर्ज मुक्त जीवन रिटायरमेंट की दिशा में बड़ा कदम है।

इमरजेंसी फंड बनाना न भूलें

रिटायरमेंट निवेश के साथ-साथ एक मजबूत इमरजेंसी फंड होना भी जरूरी है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड में रखें। यह फंड अचानक नौकरी छूटने, बीमारी या किसी अप्रत्याशित खर्च के समय सुरक्षा कवच का काम करेगा। इससे आपको निवेश तोड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

टैक्स प्लानिंग से बढ़ाएं बचत

सही टैक्स प्लानिंग से आप अपनी निवेश क्षमता बढ़ा सकते हैं। आयकर की धारा 80सी, एनपीएस में अतिरिक्त निवेश (80सीसीडी(1बी), हेल्थ इंश्योरेंस (80डी) और कैपिटल गेन प्लानिंग का लाभ उठाएं। टैक्स बचत केवल बचत नहीं है, बल्कि आपके भविष्य के लिए अतिरिक्त निवेश का अवसर है।

पर्याप्त बीमा सुरक्षा सुनिश्चित करें

40 की उम्र में परिवार आप पर निर्भर होता है। इसलिए पर्याप्त टर्म लाइफ इंश्योरेंस जरूर लें, जो कम से कम आपकी वार्षिक आय का 10–15 गुना हो। साथ ही, एक अच्छा हेल्थ इंश्योरेंस प्लान भी रखें, क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ मेडिकल खर्च तेजी से बढ़ते हैं। समय-समय पर अपनी पॉलिसी की समीक्षा करना भी जरूरी है। बच्चों की शिक्षा एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, लेकिन इसे रिटायरमेंट की कीमत पर पूरा करना समझदारी नहीं है। शिक्षा के लिए अलग निवेश योजना बनाएं, जैसे कि इक्विटी म्यूचुअल फंड या चाइल्ड प्लान। ध्यान रखें कि लंबी उम्र एक बड़ा वित्तीय जोखिम है। यदि रिटायरमेंट फंड पर्याप्त नहीं होगा, तो बाद में आर्थिक निर्भरता की स्थिति बन सकती है।

नियमित समीक्षा सफलता की कुंजी

रिटायरमेंट प्लानिंग एक बार का निर्णय नहीं, बल्कि निरंतर प्रक्रिया है। हर साल अपने निवेश, खर्च और लक्ष्यों की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है या जिम्मेदारियां कम होती हैं, तो निवेश की गति बढ़ाएं। पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का संतुलन उम्र के अनुसार रखें। जैसे-जैसे रिटायरमेंट नजदीक आए, जोखिम कम करते जाएं।

स्पष्ट रणनीति अपनाएं

40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करना देर नहीं है, बशर्ते आप अनुशासित और स्पष्ट रणनीति अपनाएं। सही दिशा में उठाया गया कदम आपको आर्थिक स्वतंत्रता और सम्मानजनक जीवन दे सकता है। याद रखें, रिटायरमेंट कोई अंत नहीं, बल्कि जीवन का नया अध्याय है और इसकी तैयारी आज से ही शुरू होती है।

खबर संक्षेप

हेरोइन सहित तीन युवकों को दबोचा

फतेहाबाद। थाना सदर फतेहाबाद पुलिस ने हेरोइन सहित तीन युवकों को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी प्रहलाद ने बताया कि पुलिस टीम गश्त एवं अपराध जांच के दौरान एनएच-9 स्थित सन स्टार होटल के सामने, गांव खारा खेड़ी के समीप पहुंची। इस दौरान दो युवक मोटरसाइकिल पर संदिग्ध अवस्था में दिखाई दिए। पुलिस वाहन को देखकर वे वहां से जाने का प्रयास करने लगे, जिन्हें संदेह के आधार पर काबू किया गया।

अग्निपथ योजना के तहत आवेदन शुरू

सिरसा। अग्निपथ योजना के तहत ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया 13 फरवरी से शुरू हो गई है और 2 अप्रैल 2026 तक होगी। भर्ती के लिए इच्छुक उम्मीद्वार को अपना नाम वेबसाइट पर पंजीकरण करना अनिवार्य है। भर्ती निर्देशक ने बताया कि परीक्षा के लिए अभ्यार्थी द्वारा परीक्षा शुल्क 250 रुपये का भुगतान ऑनलाइन करना होगा। योग्यता के अनुसार 2 अग्निवीर श्रेणी के लिए आवेदन करने का विकल्प इस वर्ष भी दिया गया है।

सैकड़ों फीट तार चोरी के मामले में युवक काबू

फतेहाबाद। ट्यूबवेल की केबल चोरी करने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना सदर रतिया पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान गुरप्रीत पुत्र सत्तू राम निवासी हरौली के रूप में हुई है। थाना सदर रतिया प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद ने बताया कि इस बारे रामकिशन पुत्र आईदान सिंह निवासी गांव चंदो खुर्द ने पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई थी।

नशीली गोलियों व कैप्सूल सहित युवक को पकड़ा

फतेहाबाद। नशे के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत सीआईए फतेहाबाद टीम ने नशीली गोलियां एवं कैप्सूल बरामद कर एक युवक को गिरफ्तार किया है। सीआईए फतेहाबाद प्रभारी उपनिरीक्षक वेदपाल ने बताया कि पुलिस टीम गश्त एवं अपराध जांच के दौरान आकावाली पुल, फतेहाबाद-सिरसा बाईपास रोड पर मौजूद थी। इसी दौरान पुलिस को सूचना मिली कि अजय नशीली दवाएं बेचने का काम करता है। इस सूचना पर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए युवक को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस ने किया 7.9 लाख रुपये की चोरी की वारदात का खुलासा

भाई के दुकान पार्टनर ने दिया चोरी की वारदात को अंजाम,आरोपी से 3.50 लाख रुपये किए बरामद

एक आरोपी गिरफ्तार, 3.50 लाख बरामद, आरोपी को लिया रिमांड पर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

हांसी। बंद आवास से नकदी चुरा कर ले जाने वाला आरोपी पुलिस गिरफ्त में।

बरवाला। डॉग स्क्वायड टीम घटनास्थल का जायजा लेते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

लाल सड़क निवासी हितेश ढिंगरा के बंद आवास से हुई 7.90 लाख रुपये की चोरी की वारदात की गुत्थी सुलझाते हुए पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से चुराए गए चोरी की गई राशि में से 3 लाख 50 हजार की नकदी बरामद की है। चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपी की पहचान जगदीश कॉलोनी निवासी नीरज के रूप में हुई है। पूछताछ में खुलासा हुआ है कि पकड़ा गया आरोपी हितेश ढिंगरा के छोटे भाई की दुकान पर पार्टनर है और शादियों में डीजे बजाने तथा डेकोरेशन का काम करता है। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश कर दो दिन के रिमांड पर लिया है। रिमांड के दौरान उसे अंबाला ले जाकर उसकी मौसी के लड़के के घर छिपाए गए रुपये बरामद करने का प्रयास किया जाएगा।

मामले की जानकारी देते हुए डीएसपी विनोद शंकर ने बताया कि लाल सड़क निवासी हितेश ढिंगरा ने 8 फरवरी को देर शाम शहर थाना में घर में रखी नकदी चोरी होने की शिकायत दी थी। हितेश ने बताया था कि वह अपने परिवार सहित निजी कार्य से दिल्ली गया हुआ था। शिकायत के आधार पर शहर मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी।

आरोपी को अंबाला लेकर जाएगी पुलिस

पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए टावर डंप के आधार व जांच के दौरान मिले साक्ष्यों के आधार पर नारनौंद सीआईए पुलिस ने शुक्रवार रात को आरोपी नीरज को लाल सड़क क्षेत्र से गिरफ्तार कर पूछताछ करने पर उसके कब्जे से चुराई गई राशि में 3 लाख 50 हजार की नकदी बरामद की गई। आरोपी ने पूछताछ में बताया किया कि शेष रुपये उसने अपनी मौसी के लड़के के घर अंबाला में छिपाकर रखे हुए हैं। डीएसपी ने बताया कि रिमांड के दौरान उसे अंबाला ले जाकर उसकी मौसी के लड़के के घर छिपाए गए रुपए बरामद करने का प्रयास किया जाएगा।

डीजे व डेकोरेशन का काम करते हैं आरोपी

डीएसपी विनोद शंकर ने बताया कि पकड़ा गया आरोपी हितेश ढिंगरा के छोटे भाई की दुकान पर शादियों में डीजे बजाने तथा डेकोरेशन का काम करता है और उसे बता था आज हितेश व उसका परिवार दिल्ली गए हैं तथा घर पर कोई नहीं है। इसलिए वह दिन में घर पहुंचा और कमरे तथा लॉकर का ताला तोड़ उसमें रखी नगदी निकाल ली। डीएसपी विनोद शंकर ने बताया कि आरोपी को पहला लॉकर तोड़ते ही उसमें 7.90 लाख रुपये की नगदी बरामद हो जाने पर उसने अलमारी और घर में रखे किसी सामान को हाथ नहीं लगाया बल्कि लॉकर में मिली नगदी को लेकर मौके से फरार हो गया।

मंदिर का ताला तोड़कर किए जेवर चोरी

बरवाला। गांव गैबीपुर में मेन रोड पर स्थित एक मंदिर का अज्ञात चोर ताला तोड़कर लाखों रुपये के सोने चांदी के आभूषणों व अन्य सामान की चोरी करके फरार हो गए हैं। पुलिस ने सूचना पाते ही मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण करके जांच पड़ताल आरंभ कर दी। डॉग स्कवाड टीम ने भी मौके पर पहुंच कर घटनास्थल का जायजा लिया। गांव गैबीपुर निवासी कैलाशो ने बताया कि मेन रोड पर स्थित शेरांवाली मंदिर के साथ लगता उसका मकान टूट गया है, जिसके चलते इस मकान का सारा सामान इस मंदिर में रखा हुआ था। शुक्रवार देर शाम को वो मंदिर को ताला वगैरह लगाकर किसी आवश्यक कार्य के लिए बाहर चले गए थे। शनिवार प्रातः जब आए तो मंदिर का ताला टूटा मिला और मंदिर में रखा घर का सारा सामान बिखरा हुआ मिला।

आरोपी को पकड़ाए नोटों का बंडल

पुलिस द्वारा अपने ही पार्टनर के भाई के घर चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपी नीरज को ही कोर्ट के बाहर चुराए गए नोटों का बंडल थमा दिया। पुलिस ने ऐसा चोरी के आरोपी के साथ फोटो खिंचवाने के लिए किया। दरअसल अपने ही पार्टनर के भाई के घर चोरी करने वाले आरोपी को पुलिस शनिवार को कोर्ट में पेश करने गई थी और कोर्ट में पेश करने बाद जब वह चोर को बाहर ला रही थी तो मीडियाकर्मियों ने उसके फोटो खिंचने चाहे। इसी दौरान पुलिसकर्मियों ने चोर से बरामद लाखों रुपये की राशि को चोर को थमा दी और स्वयं भी चोरी के आरोपी के साथ फोटो खिंचवाने लग गए।

आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज

ऑनलाइन टास्क के नाम पर युवक से 90 हजार की साइबर ठगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

साइबर ठगों द्वारा बास थाना क्षेत्र के गांव मदनहेड़ी निवासी एक युवक से ऑनलाइन टास्क पूरा करने के नाम पर 90 हजार रुपये की ठगी किए जाने का मामला सामने आया है। ठगों ने पहले मुनाफे का लालच देकर युवक का विश्वास जीता, और उससे 90 हजार रुपसे हड़प लिए। पीड़ित ने इस संबंध में ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराई है, जिसके बाद हांसी साइबर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस को दी शिकायत में मदनहेड़ी निवासी दीपक ने बताया कि वह सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहा है और 7 फरवरी को उसके टेलीग्राम अकाउंट पर घर बैठे ऑनलाइन जॉब का एक लिंक मिला। इस लिंक पर भरोसा कर दीपक ने 8 फरवरी से ऑनलाइन टास्क पूरे करना शुरू कर दिया। शुरुआत में उसने 1000 रुपये का निवेश किया, जिसके बदले उसे 1400 रुपये का लाभ मिला।

शुरुआत में लाभ मिलने ने बढ़ा लालच

दीपक ने बताया कि शुरुआती लाभ मिलने से उसका एप पर भरोसा बढ़ गया। जिसके बाद उसने अपने केनरा बैंक के खाते से कुल 90 हजार रुपये का निवेश कर दिया। हालांकि, इसके बाद उसे कोई मुनाफा नहीं मिला। जब उसने ठगों से संपर्क किया, तो उसे बताया गया कि उसका अकाउंट फ्रीज हो गया है। ठगों ने अकाउंट अनफ्रीज करने और मुनाफा दिलाने के लिए 50 हजार रुपये और जमा करने की मांग की। ठगों की इस मांग पर दीपक को शक हुआ। उसने 9 फरवरी को राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करके ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराई। ऑनलाइन शिकायत के उपरांत ठगी के शिकार दीपक ने साइबर क्राइम थाना हांसी में भी लिखित शिकायत देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई और उससे ठगी गई रकम वापस दिलाने की मांग की। पुलिस ने शिकायत पर तत्काल प्रभाव से कार्रवाई शुरू कर दी है।

महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज में सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शुभारंभ

- शिविर में छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की दी प्रस्तुति

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। शिविर के शुभारंभ अवसर पर उपस्थित अतिथिगण।

भिवानी रोहिल्ला स्थित महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज की एनएसएस यूनिट द्वारा महाविद्यालय में सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में समाजसेवी सुषमा गोयल उपस्थित हुए। सर्वप्रथम कार्यक्रम का आगाज मुख्यातिथि सुषमा गोयल, महाविद्यालय डायरेक्टर डॉ नीलम प्रभा, प्राचार्या डॉ. शमीम शर्मा, महारानी लक्ष्मीबाई त्रिलोकचंद स्कूल प्राचार्या डॉ. सरिता शर्मा व एनएसएस प्रभारी ज्योति वर्मा ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन से किया। एनएसएस प्रभारी ज्योति वर्मा ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों और स्वयंसेविकाओं का अभिनंदन किया। इस अवसर पर एनएसएस स्वयंसेविकाओं द्वारा भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। प्राचार्या डॉ शमीम शर्मा ने कहा कि एनएसएस विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से और समूह के रूप में भी विकसित होने में मदद करता है।

विशदसागर महाराज का हिसार में मंगल प्रवेश

- जैन समाज ने किया मुनी श्री का जोरदार स्वागत
- ढोल-ताशों की गूंज, जयकारों और श्रद्धा के भाव से पूरा वातावरण धर्ममय बन गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। जैन संत का स्वागत करते शहरवासी। *फोटो : हरिभूमि*

हिसार धर्मनगरी उस समय आध्यात्मिक उत्साह से सराबोर हो उठी जब मुनि श्री 108 विशदसागर जी महाराज, मुनि श्री 108 शिवसागर जी महाराज तथा एलक श्री 105 वैराग्यसागर जी महाराज संसंघ का नगर में मंगलमय प्रवेश हुआ। ढोल-ताशों की गूंज, जयकारों और श्रद्धा के भाव से पूरा वातावरण धर्ममय बन गया। तीनों संत आचार्य श्री 108 विद्यासागर महाराज के प्रभावक सुशिष्य हैं, जिनके आगमन को जैन समाज ने विशेष सौभाग्य का अवसर बताया।

इस मौके पर श्री दिगंबर जैन पंचायत हिसार, श्री श्वेताम्बर तेरापंथी सभा हिसार और श्री एस एस जैन सभा हिसार के धर्मानुरागी श्रावकों व कार्यकारिणी सदस्यों ने संयुक्त रूप से मुनि त्रय की भव्य अगवानी की।

शहर के विभिन्न स्थानों पर भक्तों ने पाद-प्रक्षालन, मंगल आरती और पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। पंचायत अध्यक्ष नवीन जैन ने बताया कि लंबे अंतराल के बाद हिसार को मुनि संघ का सानिध्य प्राप्त हुआ है, जिससे समाज में विशेष उत्साह है। उन्होंने जानकारी दी कि मुनि संघ का प्रवास नागोरी गेट स्थित बड़ा जैन मंदिर नागोरी गेट में रहेगा।

पुलवामा में शहीद हुए 40 वीर जवानों को अर्पित की श्रद्धांजलि

- सरहद पर खड़े सैनिकों की वजह से आज आमजन सो रहे चैन की नींद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

हांसी। शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित कर पुलवामा के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते समिति सदस्य।

शहीद भगत सिंह संगठन समिति के सदस्यों ने शनिवार को लाल सड़क स्थित शहीदी स्मारक पर 14 फरवरी 2019 में पुलवामा में आतंगवादियों द्वारा मारे गए 40 सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर भाजपा प्रवक्ता, राष्ट्रीय सलाहकार नेहा धवन ने मुख्य अतिथि के रूप में शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की। नेहा धवन ने कहा कि काश आज देश का प्रत्येक नागरिक सैनिकों की शहादत को याद कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का कार्य करते क्योंकि आज देश की सीमाओं पर सैनिक खड़े है तो हम चैन की नींद सो रहे है जबकि हमारी सुरक्षा में लगे फौजियों को आराम की नींद भी नसीब नही होती।

इस मौके पर किशोरी नागपाल, रामस्वरूप खट्टर, हमेश खुराना, फतेह सिंह गुर्जर, हंसराज खेत्रपाल, सुरेन्द्र वधवा, अजय भारद्वाज, विजयपाल शास्त्री, राजकुमार जांगड़ा, नरेन्द्र शर्मा, मन्नु ड्रेस वाले, सुभाष महता, डॉ. मुन्ना अरोड़ा, बंसी लाल छाबड़ा, लीलू राम फौजी, चन्दन अरोड़ा आदि उपस्थित थे।

राजकीय कॉलेज के विद्यार्थियों ने किया अमृतसर और बाघा बॉर्डर का भ्रमण

- यात्रा से छात्रों में सांस्कृतिक ज्ञान व देशभक्ति की भावना बढ़ेगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौंद

नारनौंद। अमृतसर में गोल्डन टैंपल के सामने खड़ी छात्राएं।

राजकीय महाविद्यालय खेड़ी चौपटा के प्राचार्य अनिल मेहता के दिशा निर्देशन में दो दिवसीय अमृतसर व बाघा बॉर्डर के लिए शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की छात्राओं का एक दल अपने शिक्षकों के साथ अमृतसर और बाघा बॉर्डर की शैक्षिक यात्रा पर रवाना हुआ। दल में शामिल छात्राओं, शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारियों ने अमृतसर के स्वर्ण मंदिर, जालियांवाला बाग और बाघा बॉर्डर की परेड को देखा। महाविद्यालय के भ्रमण प्रकोष्ठ प्रभारी बिमला देवी ने बताया कि इस यात्रा से छात्राओं को देशभक्ति की भावना और सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त हुआ। शैक्षणिक भ्रमण के दौरान हिंदी प्राध्यापिका विद्या वती, सुभाष, डॉ कृष्ण कुमार आदि मौजूद रहे।

डॉ. गीतू कवि और लेखक के साथ है कुशल वक्ता : कुलपति

- पुस्तक की भाषा तथा कविताओं का विषय-चयन अत्यंत सशक्त और प्रभावशाली

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। कुलपति को डॉ. गीतू अपनी नवीन काव्य-पुस्तक की प्रति भेंट करते हुए।

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई को हिंदी विभाग की प्रभारी डॉ. गीतू ने अपनी नवीन काव्य-पुस्तक 'धरती को कोई उम्मीद आखिरी नहीं' की एक प्रति भेंट की गई। इस अवसर पर शैक्षणिक मामलों के अधिष्ठाता प्रो. योगेश चाबा, हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश बहमनी सहित हिंदी विभाग के समस्त प्राध्यापक उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने पुस्तक के शीर्षक की सराहना करते हुए डॉ. गीतू को इस पुस्तक के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि डॉ. गीतू एक कवि और लेखक होने के साथ-साथ एक कुशल वक्ता भी हैं, इसलिए पुस्तक की भाषा तथा कविताओं का विषय-चयन अत्यंत सशक्त और प्रभावशाली है। डॉ. गीतू ने जानकारी दी कि इस पुस्तक को विश्व पुस्तक मेले में पाठकों से व्यापक और विशेष सराहना मिली है।

रोजगार कौशल और इंटर्नशिप को लेकर विद्यार्थियों को किया जागरूक

- प्रतिस्पर्धा के दौर में केवल शैक्षणिक डिग्री पर्याप्त नहीं

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौंद

नारनौंद। छात्राओं के साथ मुख्य अतिथि और प्राचार्य डॉ. पंकज गोयत।

राजकीय महाविद्यालय नारनौंद में प्लेसमेंट सेल द्वारा रोजगार कौशल के विकास में इंटर्नशिप की भूमिका विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य वक्ता राजकुमार भोला ने विद्यार्थियों को इंटर्नशिप के महत्व, उसके व्यावहारिक लाभ तथा कैरियर निर्माण में उसकी उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पंकज गोयत ने की। मुख्य वक्ता राजकुमार भोला ने बताया कि आज के प्रतिस्पर्धी दौर में केवल शैक्षणिक डिग्री पर्याप्त नहीं है। बल्कि व्यावहारिक अनुभव भी उतना ही आवश्यक है।

प्राचार्य डॉ. पंकज गोयत ने कहा कि महाविद्यालय विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। कार्यक्रम का आयोजन प्लेसमेंट सेल राजकीय महाविद्यालय द्वारा किया गया। प्लेसमेंट सेल इंचार्ज कुमारी सोनिया नवल ने अतिथियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। समिति सदस्य डॉ. निशा और डॉ. नैना तथा स्टाफ सदस्य प्रवीण जैन भी इस अवसर पर मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

छल-कपट से दूर सादगी से व्यतीत करें अपना जीवन : करुणागिरि

मानव को कभी अहंकार नहीं करना चाहिए :साध्वी

श्री प्रयागगिरी शिवालय ट्रस्ट में श्रीमद् भागवत महापुराण की कथा का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। सांसद जयप्रकाश, पूर्व मंत्री डॉ. कमल गुप्ता व अन्य समाजसेवियों को सम्मानित करते शिवालय ट्रस्ट के प्रधान बजरंग गर्ग। *फोटो :हरिभूमि*

महामंडलेश्वर साध्वी करुणागिरि ने कहा कि भगवान निर्मल मन से किए गए अपने दास के वचन को भी निभाते हैं, मानव को कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। अहंकार के कारण बड़े-बड़े लोग ही नहीं देवताओं के निकट रहने वाले संत गंधर्व ही नहीं बल्कि स्वयं देवता भी मृत्यु लोक पर कष्ट भोग चुके हैं।

साध्वी करुणागिरि ने श्री प्रयागगिरी शिवालय ट्रस्ट में श्रीमद् भागवत महापुराण की कथा के छठे दिन श्रद्धालुओं को प्रवचन देते हुए कहा कि मनुष्य को बाहरी साफ सफाई के साथ-साथ अपने मन को भी शुद्ध व

भंडारा व हवन का कार्यक्रम कल

इस अवसर पर शिवालय मंदिर ट्रस्ट के प्रधान बजरंग गर्ग ने मुख्य अतिथि हिसार लोकसभा सांसद जय प्रकाश, पूर्व मंत्री डॉ. कमल गुप्ता, प्रमुख समाजसेवी जगदीश जिंदल, ललित शर्मा, अक्षय मलिक, ऋषि राज गर्ग, डॉ नकुल गुप्ता, कुमार मुकेश, प्रवीण गर्ग को स्मृति चिन्ह देकर विशेष सम्मान किया। गर्ग ने कहा कि शिवालय मंदिर ट्रस्ट में 16 फरवरी को विशाल भंडारा व हवन का कार्यक्रम रहेगा। इस अवसर पर सज्जन गुप्ता, ओम प्रकाश असीजा, जगत नारायण, सुरेंद्र गुप्ता, पितरू मल गोयल, पार्षद सुनील वर्मा, नारायण दास बंसल, रमेश पटवारी, पूर्व पार्षद कृष्ण खटाना आदि धर्म प्रेमियों ने भारी संख्या में भाग लिया।

करना चाहिए। अपना जीवन सादगी से व्यतीत करना चाहिए हमें स्वयं को कपट से दूर रखना चाहिए। जबकि हमारे जीवन में कोई संकट जाना चाहिए। हमें भागवत ही दोष रहित बना कर भगवान से मिलाती है। अपनी इच्छाएं श्री चरणों तक पहुंचाने का माध्यम भागवत है।

खबर संक्षेप

10 बेसहारा पशुओं पकड़कर भेजा गो-अभ्यारण

हिसार। नगर निगम द्वारा बेसहारा पशुओं को पकड़ने का अभियान लगातार जारी है। अभियान के सहायक नोडल अधिकारी सुरेन्द्र वर्मा की देखरेख में नगर निगम की टीम ने शनिवार को विभिन्न क्षेत्रों में कार्रवाई की। एएसआई संदीप बिश्नोई ने बताया कि नगर निगम की टीम ने पटेल नगर, कैमरी रोड, सेक्टर 16-17 क्षेत्र से 10 बेसहारा पशुओं को पकड़ा। पकड़े गए सभी पशुओं को गौ-अभ्यारण भेज दिया गया है।

स्वच्छता नियमों के उल्लंघन पर किए 22 चालान

हिसार। शहर को स्वच्छ बनाए रखने के उद्देश्य से नगर निगम द्वारा निरंतर कदम उठाए जा रहे हैं। स्वच्छता नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ नियमित रूप से कार्रवाई की जा रही है। इसी कड़ी में नगर निगम की टीमों ने खुले में कचरा डालने और स्वच्छता नियमों की अवहेलना करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए 22 चालान किए। एएसआई राहुल सैनी, एएसआई राहुल पंवार एएसआई रोहित ने खुले में कचरा डालने पर 12 क्वार्टर रोड, सूर्य नगर, जहाजपुल, विजयनगर क्षेत्र में 6 दुकानदारों के चालान किए।

डीएसपी ने सुनीं ग्रामीणों की समस्याएं

नारनौंद। ग्रामीण भ्रमण अभियान के तहत शनिवार को डीएसपी देवेन्द्र नैन ने गांव पाली तथा ढाणी ब्राह्मणान का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं और उनके समाधान के लिए सकारात्मक पहल का आश्वासन दिया। डीएसपी ने उपस्थित ग्रामीणों को साइबर अपराधों के बढ़ते खतरे के प्रति सचेत करते हुए बताया कि किसी भी अज्ञात फोन कॉल, लिंक या लालच भरे संदेश से सावधान रहें तथा बैंकिंग संबंधी गोपनीय जानकारी किसी के साथ साझा न करें।

गर्ल्स स्कूल में मनाया वार्षिक उत्सव

हिसार। पीएमश्री गवर्नमैंट गर्ल्स सी.सै. स्कूल मंगाली का वार्षिक उत्सव स्कूल प्रांगण में धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सर्व प्रथम मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। स्कूल की छात्राओं ने खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के कार्यक्रम को चार चांद लगाए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भूपेंद्र पनिहार, वरिष्ठ प्रभारी भाजपा युवा मोर्चा नलवा उपस्थित हुए।

महिला कॉलेज की जागृति रही भाषण प्रतियोगिता में प्रथम

हिसार। शहर के महिला कॉलेज की बीएससी प्रथम वर्ष की छात्रा जागृति ने गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय गणित विभाग की ओर से आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के कार्यकारी प्राचार्य सतीश सिंगला ने छात्रा को सम्मानित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के गणित विभाग के सभी प्राध्यापकों ने छात्रा को बधाई दी।

माइग्रेशन की मांग को लेकर नर्सिंग छात्राओं का धरना दूसरे दिन में प्रवेश

विधायक आवास के बाहर रातभर धरने पर बैठी रही नर्सिंग छात्राएं

माइग्रेशन में प्रशासनिक स्तर पर जानबूझकर की जा रही है देरी, छात्रों की पढ़ाई हो रही है प्रभावित

हरिभूमि न्यूज ⏭ हांसी

माइग्रेशन की मांग को लेकर विधायक विनोद भयाना के आवास के बाहर धरने पर बैठी नारनौंद क्षेत्र के एक निजी नार्सिंग कॉलेज की छात्राओं का धरना शनिवार को दूसरे दिन भी जारी रहा। छात्राएं अपनी मांग पूरी होने तक धरना जारी रखने पर अड़ी हुई हैं। इससे पूर्व छात्राओं ने शुक्रवार रात को विधायक विनोद भयाना के आवास के बाहर टेंट लगाकर धरना दिया और पूरी रात टैंट में गुजारी। धरने पर बैठी छात्राओं ने आरोप लगाया कि प्रशासनिक स्तर पर जानबूझकर देरी की जा रही है, जिससे उनका शैक्षणिक भविष्य और पढ़ाई प्रभावित हो रही है। उन्होंने मांग की है कि अलॉटमेंट प्रक्रिया जल्द पूरी कर उन्हें नए कॉलेजों में समायोजित किया जाए। छात्राओं के रातभर के धरने को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने विधायक आवास व धरने पर बैठी छात्राओं की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। विधायक आवास के आसपास काफी संख्या में महिला व पुरुष पुलिस कर्मियों तैनात किया गया है, ताकि किसी भी अप्रिय स्थिति को रोका जा सके। इस दौरान छात्राओं की सुरक्षा के मद्देनजर किसान नेताओं ने भी छात्राओं की मांग का समर्थन करते हुए छात्राओं की मांगों को उचित बताया और प्रशासन से जल्द से जल्द समाधान किए जाने की अपील की तथा किसान नेता सुरेश कोथ और दशरथ मलिक सहित कई अन्य नेता रातभर धरना स्थल पर मौजूद रहे। वहीं धरने पर बैठी छात्राओं को प्रशासनिक अधिकारियों ने भी आश्वासन दिया है कि कॉलेज अलॉटमेंट की प्रक्रिया शीघ्र ही पूरी कर ली जाएगी।

छात्राओं की मांग का किसान नेताओं ने किया समर्थन, जल्द समाधान की अपील की

हांसी। धरने पर बैठी छात्राओं और किसान संगठन के पदाधिकारियों को संबोधित करते किसान नेता व विधायक विनोद भयाना के आवास के बाहर तैनात पुलिस कर्मी।

इन्होंने भी दिया समर्थन

छात्र संगठन के अलावा शनिवार को किसान नेता विकास सीसर, अक्षय नरवाल, अमन नेहरा, किसान नेत्री सुमन भाटोल बीएसपी नेता एडवोकेट मलकियत सहित कई अन्य नेताओं धरना स्थल पहुंच छात्राओं की मांग का समर्थन करते हुए जल्द समाधान की मांग की। वहीं धरने पर लगातार बढ़ रही प्रदर्शनकारियों की संख्या को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने भी विधायक आवास की सुरक्षा को बढ़ाया गया है।

उचाना नर्सिंग कॉलेज की छात्राएं भी समर्थन में पहुंची

माइग्रेशन की मांग को लेकर विधायक आवास के बाहर धरने पर बैठी छात्राओं को शनिवार सुबह उस समय ओर मजबूती मिली जब उचाना स्थित एक नर्सिंग कॉलेज की छात्राएं भी नर्सिंग कॉलेज की छात्राओं के समर्थन में हांसी पहुंची। इसके अतिरिक्त जीजेयू हिसार से छात्र संगठन केएसओ प्रधान हरिकेश ढांडा व चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय जींद से छात्र संगठन प्रधान सुमित लाठर धरना स्थल पर पहुंचे और आंदोलनरत छात्राओं की मांग का समर्थन किया। इस अवसर पर छात्र नेता हरिकेश ढांडा ने सरकार व प्रशासन से सोमवार तक छात्राओं के माइग्रेशन व कालेज अलाटमेंट की प्रक्रिया पूरी करने का आग्रह करते हुए कहा कि यदि प्रशासन ने सोमवार तक छात्राओं की मांगों को पूरा नहीं किया तो धरने को बड़े आंदोलन का रुप दिया जाएगा।

श्री कृष्णा स्कूल में स्टेम एजुकेशन पर कार्यशाला

हरिभूमि न्यूज ⏭ हांसी

श्री कृष्णा प्रणामी पब्लिक स्कूल में शनिवार को सीबीएसई द्वारा शिक्षकों के लिए स्टेम एजुकेशन पर आधारित एक दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में सीबीएसई की ओर से अनिल कुमार और आस्था ने शिरकत की। कार्यशाला में क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों के लगभग 60 शिक्षकों ने भाग लिया। इस दौरान स्टेम एजुकेशन के मुख्य उद्देश्यों, इसकी वर्तमान प्रासंगिकता और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में योगदान पर विस्तार से चर्चा की गई। रिसोर्स पर्सन्स ने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बताया कि कैसे विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित को एकीकृत कर पढ़ाई को रोचक बनाया जा सकता है। इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्य अनिल कुमार ने कहा कि स्टेम शिक्षा आधुनिक युग की अनिवार्य आवश्यकता है।

हांसी। स्टेम एजुकेशन कार्यशाला में भाग लेते विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक।

अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए प्रशिक्षण शिविर लगाया

हांसी। एसडी मॉडर्न पब्लिक स्कूल में शनिवार को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुसार सीबीपी के दिशा निर्देश अनुसार शिक्षा के प्रति अभिभावकों को जागरूक करना विषय पर एक दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ प्रशिक्षक बबीता देवी व नीलम बूरा ने विभिन्न गतिविधियों, चर्चाओं और उदाहरणों के माध्यम से शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों के 60 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन सीबीएसई संयोजक व कम्प्यूटर विभाग अध्यक्षा डॉ रश्मि जैन ने किया।

पुलवामा शहीदों की स्मृति में आर्यनगर में 60 युवाओं ने किया रक्तदान

- गौतम बुद्धा सोसायटी द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में शहीदों को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

निकटवर्ती गांव आर्यनगर में पुलवामा के अमर शहीदों की स्मृति में गौतम बुद्धा सोसायटी के तत्वावधान में सातवां विशाल रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। मुख्य बस स्टैंड स्थित धर्मशाला में आयोजित इस शिविर में अमनदीप अस्पताल ब्लड सेंटर की टीम ने अपनी सेवाएं प्रदान करते हुए कुल 60 यूनिट रक्त एकत्रित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं राष्ट्रगान के साथ किया गया। शिविर के सफल आयोजन में चौधरी राजूराम सोसायटी, यूथ ब्लड डोनर्स वेलफेयर सोसायटी, आजाद युवा मंडल नीफा हिसार तथा ग्राम पंचायत आर्यनगर का विशेष सहयोग रहा। बड़ी संख्या में युवाओं ने स्वेच्छा से रक्तदान कर शहीदों के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की।

हिसार। रक्तदाताओं से मिलते अतिथिगण। *फोटो: हरिभूमि*

गुजवि व नाभास्त्र करनाल के बीच हुआ एमओयू

- सरकार की ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देने की नीति के अनुरूप एमओयू महत्वपूर्ण कदम

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय व नाभास्त्र प्राइवेट लिमिटेड, करनाल के बीच ड्रोन तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और एयरोस्पेस अनुप्रयोगों के क्षेत्र में संयुक्त शोध, प्रशिक्षण, नवाचार और अन्य संबंधित सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। गुजविप्रौवि की ओर से विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने तथा नाभास्त्र प्राइवेट लिमिटेड, करनाल की ओर से प्रबंधक निदेशक अंजलि वर्मा ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर गुजविप्रौवि के कुलसचिव डा. विजय कुमार, डीन इंटरनेशनल अफेयर्स प्रो. ओम प्रकाश सांगवान, उप निदेशक पीडीयूआईआईसी प्रो. विमल के. झा, एसोसिएट डीन इंटरनेशनल अफेयर्स डा. प्रियंका तथा नाभास्त्र प्राइवेट लिमिटेड, करनाल के तकनीकी सलाहकार सेवानिवृत्त कर्नल लक्ष्यजीत सिंह चौहान उपस्थित रहे। नाभास्त्र प्राइवेट लिमिटेड, करनाल की ओर से प्रबंधक निदेशक अंजलि वर्मा ने कहा कि नवाचार को बढ़ावा देने और विद्यार्थियों को अत्याधुनिक ड्रोन टेक्नोलॉजी का हैंड्स ऑन एक्सपोजर प्रदान करने के दिशा में इस समझौते को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. विजय कुमार, डीन इंटरनेशनल अफेयर्स प्रो. ओम प्रकाश सांगवान आदि उपस्थित रहे।

हिसार। एमओयू का आदान-प्रदान करते गुजविप्रौवि के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई व नाभास्त्र करनाल की ओर से प्रबंधक निदेशक अंजलि वर्मा।

मिलेगा बढ़ावा

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि यह एमओयू हरियाणा सरकार की ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देने की नीति के अनुरूप एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने मुख्यमंत्री द्वारा हाल ही में घोषित हिसार जिले के सिसाय गांव में देश के पहले ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग टेक्नोलॉजी हब, जो दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा हब होगा, की स्थापना का उल्लेख करते हुए कहा कि यह शैक्षणिक-औद्योगिक सहयोग कुशल मानव संसाधन तैयार करने, शोध को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय ड्रोन इकोसिस्टम को मजबूत करने में सहायक होगा।

मांगों को लेकर हरियाणा स्टेट पेंशनर्ज समाज ने बैठक कर रोष जताया

हिसार। हरियाणा स्टेट पेंशनर्ज समाज की कार्यकारिणी की बैठक क्रांतिमान पार्क में जिलाध्यक्ष रोहताश छाछिया की अध्यक्षता में हुई। इसमें अपनी मांगों को लेकर सरकार के प्रति गहरा रोष प्रकट किया गया। कार्यकारिणी के मुख्य सरंक्षक राजेन्द्र सिंह नैन ने अपने सम्बोधन में बताया कि 8वें वेतन आयोग में पैंशनर्ज के साथ उदासीन रवैया अपनाने पर, 65, 70 व 75 की आयु उपरांत पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश की तर्ज पर 5, 10 व 15 प्रतिशत बेसिक पेंशन में बढ़ोतरी करने, चिकित्सा भत्ता पांच हजार रुपये मासिक देने, सभी बीमारियों के लिए कैशलेस मेडिकल सुविधा दी जाए, फैमिली पेंशनर्ज को भी एलटीसी देने आदि मांगों पर आज की बैठक में गहरा रोष प्रकट किया गया। इस अवसर पर राजेन्द्र सिंह नैन, गुलाब सिंह खेदड़, सतबीर सिंह सिवाच, रामप्रकाश शर्मा, किरण दत्त शर्मा, सुभाष वर्मा, रणधीर सिंह बल्हारा, दिलबाग सिंह खर्ब, इन्द्र सिंह, बलराज सिंह घनघस आदि मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

श्री काली देवी विद्या मंदिर में मनाई महाशिवरात्रि

हांसी। विदाई समारोह में मिस व मिस्टर फेयरवेल के साथ स्कूल प्राचार्या उर्मिला शर्मा, मंजू रानी व अन्य। *फोटो: हरिभूमि*

हरिभूमि न्यूज ⏭ हांसी

- विद्यार्थियों को भगवान शिव के महान गुणों को बताया : प्राचार्या

श्री काली देवी विद्या मंदिर में महाशिवरात्रि का पर्व अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया। विद्यालय परिसर शिवमय वातावरण से गुंजायमान रहा, जहां विद्यार्थियों ने मधुर भजन, भावपूर्ण श्लोकों, ऊर्जावान सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रेरक भाषण के माध्यम से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्या गीता मेहता ने विद्यार्थियों को भगवान शिव के महान गुणों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि हमें जीवन की प्राप्तियों में संतोष रखना चाहिए, विपरीत परिस्थितियों में भी शांत और संयमित रहना चाहिए तथा चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करना चाहिए।

पंजाब के 90 फीसद से अधिक घरों का बिजली बिल आया जीरो

हरिभूमि न्यूज ⏭ हांसी

आम आदमी पार्टी ने हरियाणा की भाजपा सरकार व मुख्यमंत्री पर आरोप लगाया है कि 11 साल में इस सरकार ने बिजली क्षेत्र को कर्ज और घाटे में डूबो दिया है। पार्टी ने कहा है कि आ धि का रि क आंकड़ों के अनुसार हरियाणा के बिजली वितरण निगमों पर 27 हजार 915 करोड़ का संचित घाटा है और कुल उधारी 20 हजार 311 करोड़ तक पहुंच चुकी है। पार्टी के हांसी जिला अध्यक्ष राजेन्द्र सोरखी ने कहा कि यह स्थिति बताती है कि सरकार न तो वित्तीय सुधार कर पाई और न ही उपभोक्ताओं को राहत दे पाई। इसके विपरीत पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत मान के नेतृत्व में पंजाब स्टेट पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2024-25 में 2600 करोड़ का लाभ कमाया है, जो पिछले वर्षों की तुलना में बड़ी बढ़ोतरी है। पंजाब में 90 प्रतिशत से अधिक घरेलू उपभोक्ताओं को शून्य बिल का लाभ मिला है और लाखों परिवारों को सीधी राहत पहुंची है।

11 साल में भाजपा सरकार को हरियाणा के बिजली सेक्टर को कर्ज में डूबोया

राजेन्द्र सोरखी।

शिवरात्रि के उपलक्ष्य में निकाली कलश यात्रा

आदमपुर। मॉडल टाउन स्थित प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा शिवरात्रि के उपलक्ष्य में कलश यात्रा निकाली गई। जो मॉडल टाउन से आरंभ होकर मुख्य बाजारों से होते हुए वापस विद्यालय पहुंची। इस मौके पर समाजसेवी प्रदीप बेनीवाल, तरसेम गोयल, रितु गर्ग तथा सावित्री बहन ने किया तथा ध्वजारोहण किया गया। इस मौके पर ईश्वर अग्रवाल, चंद्र दहिया, आनंद मोहन इलाहाबादी, विजय यादव, पुरुषोत्तम दास, कमल चोपड़ा कविता, ममता, सुमन सहित अनेक गन्मान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

बाइक की टक्कर से बुजुर्ग की मौत, केस दर्ज

हांसी। क्षेत्र के गांव हाजमपुर में हुए सड़क हादसे में 61 वर्षीय मुंशी राम की मौत हो गई। मुंशी राम प्लेटलेट्स कम होने के कारण स्वास्थ्य लाभ के लिए बकरी का दूध लेने घर से निकले थे। गांव के वाटर वर्क्स के पास पीछे से आ रही एक तेज रफ्तार बाइक ने शुक्रवार शाम को उन्हें टक्कर मार दी। ग्रामीणों ने बताया कि बाइक की हेडलाइट बंद थी, जिसके कारण राइडर पैदल चल रहे मुंशी राम को देख नहीं पाया और हादसा हो गया। टक्कर इतनी भीषण थी कि मुंशी राम गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के तुरंत बाद ग्रामीणों ने बाइक राइडर को पकड़कर पुलिस को सूचना दी। घायल मुंशी राम को हांसी के सामान्य अस्पताल ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें हिसार के एक निजी अस्पताल रेफर किया गया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 7988727916, 9315429403, 9253681005

भारतीय रेलवे के लिए स्टेनलेस स्टील का यह नमक कंटेनर बनाने पर हमें बहुत गर्व : अभ्युदय जिंदल

जेएसएल ने भारत का पहला जंग-रोधी स्टेनलेस स्टील नमक कंटेनर किया विकसित

कंटेनर का सफल लोडिंग व अनलोडिंग परीक्षण किया गुजरात के गांधीधाम में

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

भारत की अग्रणी स्टेनलेस स्टील निर्माता कंपनी जिंदल स्टेनलेस ने माल ढुलाई व्यवस्था के आधुनिकीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारतीय रेलवे के लिए नमक की ढुलाई के लिए देश का पहला स्टेनलेस स्टील कंटेनर तैयार किया है। नमक की ढुलाई में स्टेनलेस स्टील का उपयोग एक महत्वपूर्ण कदम है, जो माल ढुलाई व्यवस्था को अधिक मजबूत व टिकाऊ बनाएगा। इस कंटेनर का सफल लोडिंग व अनलोडिंग परीक्षण 10 फरवरी को गुजरात के गांधीधाम में स्थित भीमासर में किया गया।

हिसार। जिंदल स्टेनलेस द्वारा निर्मित कंटेनर। *फोटो: हरिभूमि*

पूरी तरह स्टेनलेस स्टील बना कंटेनर

20 फुट का यह नमक कंटेनर पूरी तरह स्टेनलेस स्टील से बना है। इसके अंदर और बाहर के सभी मजबूत हिस्से भी स्टेनलेस स्टील के हैं। जिंदल स्टेनलेस ने कंटेनर के मुख्य ढांचे में 304 ग्रेड स्टेनलेस स्टील का इस्तेमाल किया है, जिसपर क्लोराइड युक्त वातावरण में भी जंग नहीं लगता। बाहरी सतह और नीचे के फ्रेम के लिए जेटी ग्रेड स्टेनलेस स्टील इस्तेमाल किया गया है। यह स्टेनलेस स्टील बेहद मजबूत होने के साथ हल्का भी होता है, जिसकी वजह से इसका उपयोग आसान होता है।

समस्याओं को काफी हद तक किया जा सकेगा कम

इस उपलब्धि पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए जिंदल स्टेनलेस के प्रबंध निदेशक अभ्युदय जिंदल ने कहा कि नमक की ढुलाई में जंग लगने की समस्या ज्यादा होती है। इसकी वजह से कंटेनर की बार-बार मरम्मत करानी पड़ती है, समय से पहले क्षति होती है और आर्थिक नुकसान होता है।

तेज रफ्तार से थका मन चाहे सुकून भरी स्लो लाइफ

पिछली एक सदी में तकनीकी विकास में क्रांति के साथ ही लोगों की जीवनशैली भी बहुत तेज रफ्तार वाली हो गई थी। लेकिन कोविड के बाद से लोगों की सोच बदलने लगी और जल्दी से सब कुछ पा लेने के बजाय जीवन में सुकून को तरजीह देने लगे हैं। यही वजह है कि पूरी दुनिया में अब लोग तेज रफ्तार से ऊबकर स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।

कवर स्टोरी

लोकमित्र गौतम

पूरी दुनिया में स्लो लाइफ या धीमे जीवन की ओर बढ़ने को आलस्य की निशानी नहीं बल्कि नई चेतना का पर्याय माना जा रहा है। वास्तव में स्लो लाइफ का मतलब काम को अधूरा छोड़ देना नहीं है। जीवनशैली से समझौता नहीं है और न ही स्लो लाइफ का मतलब घर में पड़े रहना है बल्कि स्लो लाइफ का मतलब है कम लेकिन अर्थपूर्ण काम करना। स्लो लाइफ का मतलब है डिजिटल डिवाइसेस से घिरे न रहना। बीच-बीच में पूरी तरह से डिजिटल डिटॉक्स होना। स्लो लाइफ का मतलब है स्थानीय जीवन का आनंद लेना और पारिवारिक जीवनशैली का लुत्फ उठाना। स्लो लाइफ का मतलब है, अपने पीढ़ियों पुराने व्यंजनों का आनंद लेना और प्रकृति से भरपूर जुड़ाव रखना। स्लो लाइफ का मतलब है रिश्तों की गुणवत्ता बढ़ाना, न कि उनकी संख्या बढ़ाना। और स्लो लाइफ का एक अंतिम मतलब है हर पल उपलब्ध होने की मजबूरी से मुक्त होना।

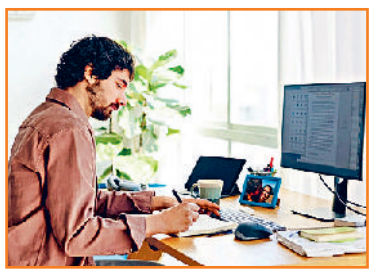

एक समय तक 'तेज रफ्तार' होना, रोमांच का सबब माना जाता था, कामयाबी की निशानी थी। इसलिए अधिकांश लोग तेज-तेज और तेज की तरफ पिछली लगभग एक सदी से दौड़ते रहे हैं। इस भागम-भाग में वाकई इंसान ने अपनी जिंदगी की रफ्तार बहुत तेज कर ली। फास्ट इंटरनेट, बुलेट ट्रेन, आवाज की गति से उड़ते हवाई जहाज, इंस्टेंट अपडेट और कुछ महीने या साल में ही करियर की बुलंदी छूना, ये सब इसी तेज रफ्तार के उदाहरण हैं। लेकिन बीते कुछ समय से अब अधिकतर इंसान इस तेज रफ्तार जिंदगी को रोमांच की बजाय आफत का सबब मानने लगे हैं। यही कारण है कि अब दुनिया, तेज रफ्तारी से रोमांचित नहीं है बल्कि स्लो लाइफ की तरकीबें खोज रही है। अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक आज स्लो लाइफ न्यू लाइफस्टाइल बन रही है, क्योंकि लोग मशीन बनने से थक चुके हैं, अब वे थोड़ा ठहरकर जीना चाहते हैं।

क्यों लौट रहे हैं धीमे की ओर: पूरी दुनिया में लोग स्लो लाइफ की तरफ लौट रहे हैं, तो इसकी वजह है कि पिछले कई दशकों के भागम-भाग के कारण परिवार की संरचना कमजोर होती जा रही है। फोन आपको किसी क्षण बेफिक्र नहीं होने देता, फुर्सत में नहीं रहने देता। नए-नए रेडीमेड पकवानों की कुछ मिनटों में सप्लाई ऐसे होने लगी है कि लोग अपने स्वाद का स्थाई सुख ही भूल गए हैं। नींद अब दुनिया की सबसे बड़ी नियामत बन चुकी है और सबसे बड़ी बात यह है कि इंसान खुद को ही भूलने लगा है। यही वजह है कि अब अमेरिका हो या एशिया, अफ्रीका और यूरोपीय देश के लोग परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं। कुछ घंटे या हफ्ते में एक दिन कम से कम बिना फोन के रहना चाहते हैं। कभी आराम से धीरे-धीरे पकाकर अपनी मनपसंद डिश खाना चाहते हैं और चाहते हैं कि कम से कम हफ्ते का एक दिन तो ऐसा हो, जब सोकर जगने का टाइमर सेट न हो। इस सबके बीच लोग अब अपने साथ भी कुछ घंटे, कुछ दिन बिताना चाहते हैं, इसलिए लोग तेज रफ्तार को छोड़कर धीमी और सुकून भरी जिंदगी की तरफ लौटना चाहते हैं।

स्लो लाइफ का सही मतलब: भले ही एक दौर में धीमी रफ्तार, आलस्य का पर्याय मानी जाती रही हो, लेकिन आज जब फास्ट लाइफ को विश्व स्वास्थ्य संगठन बर्नआउट और डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण बता रहा है, तब पहली बार जीवन के अस्थायीपन और नश्वरता से दो-चार हुए। यही वह समय था, जब बिना दफ्तर गए भी नौकरी कर सकने का विकल्प हासिल हुआ। जी हां, वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को बताया कि अगर दफ्तर न जाना पड़े तो भले एक घंटे ज्यादा भी काम करना पड़े, लेकिन दफ्तर के रास्ते के जोखिम, तनाव और अनुपयोगी समय से बच सकते हैं। कोविड ने लोगों को डिजिटली ओवरलोड कर दिया। लगातार मीटिंग्स, सोशल मीडिया की इंगेजमेंट और नोटिफिकेशंस का सिरदर्द लगातार पेशंस की परीक्षाएं लेती रही और अंततः लोग इस तेज रफ्तारी से आजीज आ गए।

शहरों से गांव की तरफ वापसी: पूरी 20वीं सदी में और 21वीं सदी के पहले लगभग दो दशकों तक पलायन का मतलब गांव से शहर की ओर जाना ही होता रहा है। लेकिन कोविड के बाद यूरोप में 16 प्रतिशत और अमेरिका में 6 प्रतिशत लोग शहर छोड़कर गांवों में बस गए। भारत में भी उच्च आयवर्ग के 2 प्रतिशत लोग न सिर्फ बड़े शहरों को छोड़कर अपनी जड़ों की ओर रहने के लिए लौटे बल्कि जो पारंपरिक रूप से अपने गांवों या पैतृक स्थानों में नहीं गए, वे भी तेज रफ्तार महानगरों को छोड़कर स्लो मोशन की जिंदगी वाले जंगलों, पहाड़ों के बीच में गांव या गांवनुमा कस्बों की ओर रुख कर गए। मेट्रो शहरों में डेढ़ से दो फीसदी लोग छोटे शहरों या कस्बों की तरफ लौटे। हालांकि भारत में शहरों से गांव की ओर वापसी का आंकड़ा लगभग न के बराबर रहा, क्योंकि भारत के गांव सामान्य सुख-सुविधा वाली जिंदगी के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए भारत में बड़े लोग या तो पहाड़ों में बसे छोटे शहरों या कम औद्योगिक और धुर खेतिहर इलाकों के कस्बों की तरफ लौटे। कोविड के बाद ही लोगों ने अपनी छतों पर बागवानी का रोमांच महसूस करना शुरू किया। स्थानीय बाजारों की वापसी हुई, पारंपरिक जीवनशैली में योग और ध्यान की हिस्सेदारी बढ़ी और मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा। इससे लोगों ने नींद का सुख महसूस किया, खुद उगाकर सब्जियां खाईं तो स्वाद के साथ आत्मसंतोष महसूस किया, रिश्तों में स्थायित्व और हार्मोनल हेल्थ में बेहतरी का एहसास किया। इसलिए स्लो लाइफ की रेटिंग जो हमेशा फास्ट लाइफ से नीचे रहती थी, पहली बार उससे ऊपर हुई।

कुछ भ्रम भी टूटे: दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही पूरी दूनिया में यह मान लिया गया था कि स्लो लाइफ का मतलब है- धीमा उत्पादन, धीमा पूंजी निर्माण, मतलब गरीबी और बदहाली। लेकिन कोविड के दौरान और उसके बाद स्लो लाइफ का मतलब यह नहीं रहा। लोगों की सोच में बदलाव आया। कोविड के बाद की स्लो लाइफ ने दुनिया को दिखाया कि धीमे होने का मतलब नाकारा होना नहीं है। धीमे होने का मतलब अर्थव्यवस्था का नुकसान नहीं है और न ही धीमे होने का मतलब उत्पादनहीनता है। स्लो जीवनशैली ने ज्यादा संतुष्टि दी और बेचैन उपभोगवाद पर लगाम लगाया। सबसे बड़ी दौलत रिश्तों में आई गर्मजोशी से मिली। लब्बोलुआब यह कि लोगों को, मजबूरी और उदासीनता में शुरू की गई स्लो लाइफ रास आ गई और अब धीरे-धीरे इससे मोहब्बत बढ़ती ही जा रही है। *

स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ने के तरीके

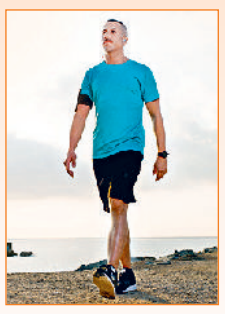

- हर दिन 30 मिनट किसी भी तरह की स्क्रीन से दूर रहें। चाहे टीवी की स्क्रीन हो, मोबाइल की या लैपटॉप की। इस दौरान फोन से नहीं, आस-पास की दुनिया से जुड़ें।
- सप्ताह में कम से कम एक दिन ऐसा रखें, जिसकी पहले से कोई प्लानिंग न हो। एक तरह से इस दिन को कुछ न करने की मस्ती का दिन बनाएं यानी नो प्लान डे।
- पैदल चलना सीखें। एक जमाने में आम आदमी हर दिन कम से कम 5-7 किलोमीटर पैदल चलता था। अब कई लोग ऐसे हैं, जो घर से बाहर सौ मीटर भी हर दिन पैदल नहीं चलते। अगर स्लो लाइफ का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो फिर से पैदल चलने की तरफ लौटें। पैदल चलने से मन भी प्रसन्न रहता है और तन भी स्वस्थ रहता है।
- काम की सीमाएं तय करें। दिन में निश्चित घंटों तक ही काम करें और हर दिन के काम की एक मात्रा तय कर लें। यह नहीं कि जब तक जग रहे हैं, काम करते रहें।
- धीमी जिंदगी का रोमांच महसूस करने के लिए दुनिया से भले कम जुड़ें, पर अपने आपसे दोस्ती जरूर करें। खुद से दोस्ती करना भी एक अव्यक्त सुख की स्थिति में रहना है।

हयूमन नेचर

शैलेंद्र सिंह

आमतौर पर माना जाता है कि इंट्रोवर्ट स्वभाव के लोगों में आत्मविश्वास और योग्यता की कमी होती है। जबकि यह केवल अलग तरह की एक पर्सनालिटी होती है। इस पर्सनालिटी के कुछ फायदे हैं तो वहीं कुछ नुकसान भी हैं।

न तो वीकनेस-न ही बीमारी अलग होती है इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी

आधुनिक मुखर और सोशल मीडिया प्रधान समाज में अंतर्मुखी यानी इंट्रोवर्ट होना अकसर गलतफहमियों का विषय बन जाता है। जबकि अनेक वैज्ञानिक शोध यह साबित करते हैं कि अंतर्मुखी होना न तो किसी तरह की कोई कमजोरी है और न ही बीमारी। हांस आइजेंक के व्यक्तित्व सिद्धांत के मुताबिक अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होना व्यक्तियों में मस्तिष्क की उत्तेजना के अलग-अलग स्तरों का होना है। अंतर्मुखी लोगों का बेसलाइन पहले से अधिक होता है, इसलिए वे शोर, भीड़ और अत्यधिक सामाजिक उत्तेजना से जल्द थक जाते हैं। इसलिए वह बहिर्मुखी लोगों के विपरीत ऐसी तमाम स्थितियों में शांत और खुद तक सीमित रहते हैं। यह उनकी मात्र जैविक वास्तविकता होती है।

मुखर दौर में शांत लोग: आज के तेज आवाजों या शोरगुल से भरे दौर में कई बार अंतर्मुखी लोग खुद को हाशिए पर महसूस करने लगते हैं। लेकिन अगर अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक शोधों की नजर से देखें तो अंतर्मुखी लोगों का यह हाशियाकरण उनकी अक्षमता नहीं बल्कि समाज की अपेक्षाओं का नतीजा है। इसलिए जेरोम कगन और हांस आइजेंक जैसे वैज्ञानिकों ने अपने शोध के जरिए साबित किया था कि अंतर्मुखी होना कोई ऐसा व्यवहार नहीं होता, जिसे लोग सीखें या उनमें वह परवरिश के कारण आए। इनके मुताबिक वास्तव में अंतर्मुखी होना एक किस्म की जैविक संरचना से जुड़ा तथ्य है, क्योंकि अंतर्मुखी लोगों का नर्वस सिस्टम दूसरे सामान्य लोगों के मुकाबले कहीं अधिक संवेदनशील होता है। लेकिन आधुनिक दौर में एक्सट्रोवर्ट यानी बहिर्मुखी लोगों को ही आदर्श मान लिया जाता है। इसके विपरीत इंट्रोवर्ट लोगों को महत्व और मान्यता नहीं दी जाती, जो महत्व और मान्यता बहिर्मुखी लोगों के खाते में आती है और इसकी शुरूआत बचपन से ही पहले घर में और फिर स्कूल में हो जाती है। वहां शांत रहने वाले बच्चों को उपेक्षित किया जाता है, भले ही वह कितना भी योग्य क्यों न हो। इसके बाद कॉर्पोरेट दफ्तरों में भी लीडर वही माना जाता है, जो ज्यादा बोलता हो और किसी भी तरह के मामले में त्वरित प्रतिक्रिया करता हो। जबकि कई बार संकट के समय अंतर्मुखी लोग ज्यादा बेहतर निर्णय लेते हैं। खासकर अगर वैज्ञानिकों, लेखकों आदि से जुड़ा कार्य हो। अडम ग्रांट ने अपने शोध से साबित किया कि प्रो-एक्टिव टीमों में अकसर ऐसे लीडर ज्यादा सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के फायदे: इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी होने के कई फायदे होते हैं। जैसे-अंतर्मुखी लोगों में गहन सोच और निर्णय क्षमता होती है। ये किसी भी विषय पर अकसर जानकारियों को बहुत गहराई तक प्रोसेस करते हैं और जल्दी में निर्णय लेने से बचते हैं। इसलिए उनके निर्णय अधिकतर सफल, सुरक्षित और सुलझे हुए होते हैं। यही कारण है कि रचनात्मक और जटिल कामों में उनकी गुणवत्ता उच्च स्तर की होती है। ऐसे लोगों में सुनने और सहानुभूति की क्षमता बहिर्मुखी लोगों से ज्यादा होती है। अंतर्मुखी लोग बेहतर श्रोता होते हैं, जिससे रिश्तों में विश्वास और गहराई बनती है। टीम लीडरशिप में यह गुण सहकर्मियों के हुनर को बाहर निकालने में मदद करता है। अंतर्मुखी लोगों में अकेले में लंबे समय तक काम करने की क्षमता और फोकस में बने रहने की प्रवृत्ति होती है। इस कारण ऐसे लोग अनुसंधान, लेखन, डिजाइन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में काफी सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के नुकसान: इस स्वाभाव के कारण इन लोगों में कुछ खामियां भी देखी जाती हैं। मसलन- अकसर ऐसे लोग वर्बल नेटवर्किंग, पब्लिक फेसिंग जॉब्स, सेल्स या राजनीतिक भूमिकाओं में फिट नहीं बैठते। ऐसी जगहों में अव्वल तो ये आते ही नहीं और आते हैं तो सफल नहीं होते हैं। दुनिया में कई काम और कई गतिविधियां ऐसी होती हैं, जो खुले रूप से बातचीत और आत्मप्रचार को तरजीह देती हैं। इस मामले में ये कमजोर पड़ते हैं। कई अध्ययनों में यह सामने आया है कि ऐसे लोगों में अवसाद या अकेलेपन से घिरने का जोखिम बना रहता है। लेकिन यह सभी अंतर्मुखी लोगों के लिए सच नहीं होता। आज के मुखर युग में शांत या गंभीर रहना अकसर आत्मविश्वास की कमी समझ लिया जाता है। इसलिए आज के दौर में ऐसे लोग कई बार प्रमोशन पाने, मान्यता हासिल करने और सार्वजनिक मंचों पर अपनी कामयाब उपस्थिति बनाने में नाकाम रहते हैं। *

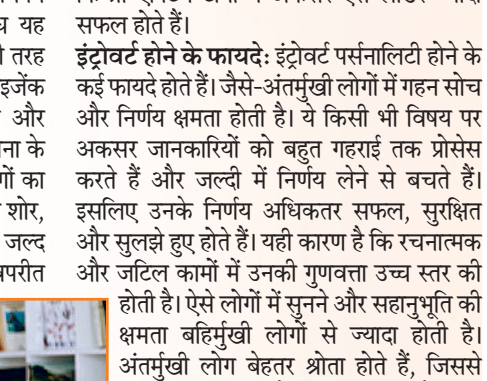

वासंती दोहे

घमंडीलाल अग्रवाल

टेसू की सरगम छिड़ी

धरती ने सज-धज किया, दुलहन-सा शृंगार।
पीत-वसन से झांकता, मानो पहला प्यार।।
जगा रही है कोकिला, मन में मीठी हूक।
गोरी पी की बाट में, बैठी बन कर मूक।।
भ्रमर सभी हैं पी रहे, फूलों का मकरंद।
पंचम सुर में गूंजते, खुशियों वाले छंद।।
धीमे-धीमे नशे में, पवन चले है खूब।
प्राणी-प्राणी जा रहा, अजब नशे में डूब।।
उर में जागी आग-सी, अंग-अंग उन्माद।
संग उन्हें भी आज लाए जा री सौतन याद।।
कण-कण से गायब हुआ, सर्दी का आतंक।
मुस्कानों ने पा लिए, सबसे ज्यादा अंक।।
धूप कुनमुनी डोलती, गरमाया परिवेश।
मधुर गंध का बांटता, हर उपवन संदेश।।
सरसों रानी पर चढ़ा, यों यौवन का रंग।
ठुमक-ठुमक कर बोलती, चली पिया के संग।।
बैरागी मन पूछता, किसका है यह खेल।
मौसम का जादू चला, फली प्रीति की बेल।।
टेसू की सरगम छिड़ी, महुआ के हैं ठाठ।
जरा देखिए खुल गई, फगुनाहट की हाट।।

व्यंग्य / अजय अनुरागी

अफसर की टांग

सुना था कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं, लेकिन देखा यह भी गया है कि कुछ अफसरों की टांग भी बहुत लंबी होती है। ऐसे ही एक अफसर की टांग दूर तक पसरी रहती थी। वह बैठता इस कक्ष में था, और टांग उस कक्ष तक फैलाए रखता था। कार्यालय के जिस कक्ष में जाओ वहीं अफसर की टांग घूमती नजर आती थी। अफसर जहां नहीं पहुंच पाता था, वहां भी उसकी टांग पहुंच जाती थी। कई बार अफसर से पहले उसकी टांग उपस्थित रहा करती थी। लोग अफसर से कम उसकी टांग से ज्यादा परेशान रहा करते थे। अब अफसर की टांगों में घंटी कौन बांधे भला!

टांग अफसर से भी ज्यादा चालाक थी। किसी को पास फटकने नहीं देती थी। अफसर की अनुपस्थिति में अफसर की टांग शासन किया करती थी। लोग चाहते थे कि अफसर टांग को थोड़ा लूज करें, तो चैन की सांस आ सके। हालांकि अफसर छोटा-मोटा था, लेकिन उसकी टांग बहुत बड़ी थी। उसकी टांग भरोसे लायक तो थी ही नहीं, फिर भी उस पर भरोसा करना पड़ता था। वह चालाक था और दूसरों की टांग को अपने हित में इस्तेमाल करना जानता था। इसलिए लोग अफसर की टांगों से अपनी टांगें बचाते फिरते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि अफसर उनकी टांगों को अपनी टांगों में ना बदल डाले। अफसर टांग का बहुत कच्चा था, इसलिए अपनी टांग को हर जगह टांग कर ले जाता था। टांग के बिना कहीं जाता भी नहीं था। टांग ने इतना प्रभाव जमा लिया था कि अफसर प्रभावहीन होने लगा था। अफसर की दोनों टांगों की दो अलग-अलग परंपराएं थीं। मगर अफसर दोनों को साध लेता था। अकसर लोग अफसर की पहली टांग के भरोसे दूसरी टांग से धोखा खा बैठते थे।

अफसर की टांगों को लेकर लोगों में बड़ा कंफ्यूजन था। पता नहीं पड़ता था कि पहली कौन सी है और दूसरी कौन सी है? लोग जिसे पहली समझते थे, वह दूसरी निकलती थी। जिसे दूसरी समझते थे, वहां टांग होती ही नहीं थी। चालाक अफसर हर मुद्दे पर एक टांग को फंसा कर रखता था तथा दूसरी टांग को बचाकर रखता था। टांग विहीन अफसर नख-दंत विहीन शेर की तरह होता है, जो गुर्रा तो सकता है मगर दबोच नहीं सकता। वह अफसर ही क्या जिसके पास टांग न हो! वह टांग ही क्या जो अड़ना न जाने। अफसर की टांगों की करामात यह थी, कि पहली उठ जाती थी तो दूसरी बैठी रहती थी, और दूसरी उठ जाती थी तो पहली लेट जाती थी। अफसर चाहता था एक साथ, एक टांग, दो काम करती रहे, ताकि टांग की स्ट्रेटेजी कोई पकड़ ना पाए। टांग से परेशान लोग, टांग को उखाड़ फेंकने के लिए, एकजुट हुए। अंत में हुआ यह कि अफसर उखड़ गया, मगर उसकी टांगें नहीं उखड़ पाईं। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

स्त्री के आंतरिक द्वंद्व की कहानियां

यह सही है कि बदलते समय के साथ परिवार और घर से बाहर भी स्त्री की भूमिका में बड़ा बदलाव आया है। मगर कमोबेश उसकी पीड़ा, घुटन और त्रासदियां अब तक नहीं बदलीं। हां, उसके रूप जरूर बदले हैं। वरिष्ठ लेखिका कल्पना मनोरमा ने अपने कहानी संग्रह 'एक दिन का सफर' में स्त्री के इसी बहुआयामी द्वंद्व को बड़ी बारीकी और मार्मिकता से उकेरा है। इन कहानियों में उन्होंने बेशुमार दबावों, तनावों से आहत स्त्री की पीड़ा को स्वर दिया है। संग्रह की कहानियां सशक्त होने के साथ ही समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक भी हैं। इसमें आज के दौर की महिलाओं के संघर्ष को भी देखा जा सकता है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'कितनी कैदें' के किरदार की घुटन, जैसे आत्मा को निर्ममता से छील कर लहूलुहान कर देती है। मर्यादा, इज्जत के नाम पर किस तरह बेटियां बिना अपराध के बलि पर चढ़ा दी जाती हैं, इस कटु सत्य को कहानी बड़े मार्मिक तरीके से बयां करती है। शीर्षक कहानी 'एक दिन का सफर' में नायिका के भीतर का द्वंद्व उसका अपना नहीं है। यह स्त्री का सामूहिक द्वंद्व है। वही द्वंद्व, जिसका सामना उसे बाहर-भीतर हर कहीं करना होता है। 'आखिरी सिगरेट' दांपत्य जीवन में प्रेम की लालसा में घुटती एक स्त्री मन की कहानी है तो 'गुनिता की गुड़िया' कैद से बाहर निकलने की एक स्त्री की छटपटाहट को बयां करती है। 'दुख का बोनसाई' मायके से लड़की के अटूट रिश्ते की कहानी है। ये कहानियां ऐसी हैं, जिनसे सहज ही हर स्त्री जुड़ाव महसूस करेगी। सटीक-जीवंत रूपकों के प्रयोग से भाषा जीवंत हो उठी है। कहानियों की भाषा ही नहीं कहन का शिल्प भी बेहतरीन है। *

पुस्तक: एक दिन का सफर, **लेखिका:** कल्पना मनोरमा,
मूल्य: 195 रुपए, **प्रकाशक:** अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

शक

शाम को ऑफिस से घर लौटते ही पति हरीश से उपासना ने कहा, 'देखिए, रोज शाम को पता नहीं पिताजी कहां जाते हैं और देर तक लौटते हैं।' 'कहां जाएंगे पार्क के अलावा। वहां इनके हम उम्र लोग मिलते होंगे। बस उनके साथ ही गपशप करते होंगे।' हरीश ने जवाब दिया।

'नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता पिताजी कहीं और ही जाते हैं और मुझसे रोज अलग-अलग तरह का नाश्ता बनवाते हैं।' उपासना ने बताया। 'तुम भी बेवजह पिताजी पर शक कर रही हो। जो उनकी इच्छा है उन्हें करने दो। मां के चले जाने के बाद उनकी इच्छाओं का ख्याल हम नहीं रखेंगे तो भला कौन रखेगा?' हरीश ने समझाया। उसी समय पिताजी कमरे के अंदर आए और बोले, 'बहू आज गर्मा-गर्म समोसे बनाकर पैक कर दो, मुझे जाना है।' 'जी पिताजी।' उपासना ने धीरे से कहा। समोसे लेकर जैसे ही पिताजी घर से निकले, उपासना भी छुपते हुए उनके पीछे-पीछे चल दी। एक-डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद पिताजी एक वृद्धाश्रम के भीतर चले गए। 'अच्छा तो यह बात है। अपने किसी यार-दोस्त को खिलाने लाते हैं पकवान।' उपासना मन ही मन बुदबुदाई। फिर दावाजे की ओट लेकर खड़ी हो गई। पिताजी किसी के साथ बैठकर समोसे खाते हुए ठहाके लगाने लगे। 'अरे, यह आवाज तो बहुत जानी-पहचानी लग रही है। कौन हैं वो, जिसके लिए पिताजी रोज नाश्ता बनवाकर लाते हैं?' मन ही मन बुदबुदाते हुए उपासना ने कमरे के भीतर झांका। 'अरे यह क्या!' वह अवाक रह गई। उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। 'मेरे बाबूजी वृद्धाश्रम में!' खुद से कहकर वह रोने लगी। दरअसल, उपासना के बाबूजी पिछले एक महीने से वृद्धाश्रम में रह रहे थे, जिसकी खबर केवल हरीश के पिताजी को ही थी। इसलिए वे रोज उपासना और हरीश से बताए बिना अपने समधी से मिलने यहां आया करते थे। *

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम

अन्नामलाईयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै

धार्मिक स्थल
शिखर चंद जैन

आज पूरे देश में महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश भर के शिव-शक्ति मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। इस मौके पर हम आपको दक्षिण भारत में स्थित कुछ प्राचीन, भव्य और प्रसिद्ध शिव मंदिरों की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं। साथ ही गुजरात में स्थित अनोखे स्तंभेश्वर महादेव मंदिर के बारे में भी बता रहे हैं।

महादेव शिव-पार्वती को समर्पित भव्य-अनोखे-प्रसिद्ध मंदिर

जिस तरह उत्तर भारत में स्थित महाकालेश्वर, काशी विश्वनाथ, नागेश्वर महादेव, वैद्यनाथ आदि शिव मंदिरों के प्रति श्रद्धालुओं में असीम श्रद्धा है। उसी तरह दक्षिण भारत में भी कई अनोखे और भव्य मंदिर स्थित हैं। प्राचीन भारत में चोल, पल्लव और चालुक्य जैसे कई राजवंशों ने लंबे समय तक दक्षिण भारत पर शासन किया। अपने शासनकाल में उन राजाओं ने देवों के देव महादेव भगवान शिव के अत्यंत भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। इन मंदिरों की अनोखी वास्तुकला दुनिया भर के पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती है। इनमें से कुछ मंदिर देश में स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में भी सम्मिलित हैं। ये प्राचीन मंदिर श्रद्धालुओं और शिव भक्तों की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम, आंध्र प्रदेशः यह शिव मंदिर आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम नामक छोटे से शहर में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है। सातवाहन शासनकाल के इतिहास के अनुसार इस मंदिर का निर्माण काल द्वितीय शताब्दी के आस-पास माना जाता है। बाद में विजय नगर साम्राज्य के राजाओं और छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस मंदिर में मंडप सहित कई संरचनाओं का निर्माण करवाया। यह मंदिर नल्लामलाई पहाड़ियों पर स्थित है, जो मंदिर को एक सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करता है। दक्षिण भारत में स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर की एक और विशेषता यह भी है कि यह देवी सती के 52 शक्ति पीठों में से एक है। यहां भगवान शिव की मल्लिकार्जुन अवतार में और माता पार्वती की भ्रामरंबा रूप में पूजा की जाती है। यहां महाशिवरात्रि, उगादि, कार्तिकाई, श्रवणमहोत्सवम धूमधाम से मनाते हैं।

तट मंदिर, महाबलीपुरम

तट मंदिर, महाबलीपुरम, तमिलनाडुः तट मंदिर दक्षिण भारत के सबसे पुराने संरचनात्मक मंदिरों में से एक है। यह परिसर बंगाल की खाड़ी के तट पर तमिलनाडु के महाबलीपुरम में समुद्र के किनारे स्थित है। इसे अपनी द्रविड़ वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) द्वारा ग्रेनाइट पत्थरों से कराया गया। इसके परिसर में तीन मंदिर हैं, जिनमें से दो भगवान शिव को और एक भगवान विष्णु को समर्पित है। मुख्य मंदिर पूर्व दिशा की ओर इस तरह से निर्मित है, जिससे सूर्योदय की किरणें शिवलिंग तक पहुंच सकें। सन् 1984 में इस मंदिर को महाबलीपुरम में स्मारकों के समूह के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

अन्नामलैयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई, तमिलनाडुः तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई शहर में स्थित अन्नामलैयार मंदिर बहुत प्रसिद्ध शिव मंदिर है। अरुणाचल पहाड़ियों की तलहटी में स्थित होने के कारण इसे अरुणाचलेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। यह पंचभूत स्थलों में से एक है, जहां भगवान शिव अग्नि तत्व के रूप में विराजमान हैं। शिवलिंग को अग्निलिंग भी कहा जाता है और यहां भगवान शिव की पूजा अरुणाचलेश्वर के रूप में की जाती है। अन्नामलैयार मंदिर परिसर भारत के सबसे विशाल मंदिर परिसरों में से एक है। इस मंदिर का 11 मंजिला गोपुरम भारत के सबसे ऊंचे मंदिर गोपुरमों में से एक है, जिसकी ऊंचाई 66 मीटर है। इस मंदिर के मुख्य देवता अरुणाचलेश्वर और अन्नामलाई अम्मन हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै, तमिलनाडुः मंदिर नगरी के नाम से विख्यात मदुरै के सबसे भव्य मंदिरों में से एक अरुलमिगु मीनाक्षी अम्मन मंदिर है, जिसे मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर की मुख्य देवी मीनाक्षी देवी हैं, जिन्हें देवी पार्वती का दिव्य अवतार माना जाता है। भगवान शिव की पूजा भगवान सुंदरेश्वरार के रूप में की जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह वह स्थान है, जहां सुंदरेश्वरार ने देवी मीनाक्षी से विवाह किया था। सन 1190 से 1205 ईसवी तक शासन करने वाले पांड्य राजा सदावर्मन कुलशेखरन प्रथम ने मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर अपने गोपुरमों (मंदिर के शिखर), विशाल हॉल, मूर्तियों, नक्काशी और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत के भव्य मंदिरों में से एक है। *

स्तंभेश्वर महादेव, वड़ोदरा गुजरात

दक्षिण भारत से दूर पश्चिमी राज्य गुजरात में भी एक प्रसिद्ध-विशिष्ट मंदिर स्तंभेश्वर महादेव स्थित है। इसमें एक ऐसा अनोखा शिवलिंग है, जिसका जलाभिषेक स्वयं समुद्र अपने जल से प्रतिदिन दो बार करता है। यह मंदिर अरब सागर में स्थित है और दिन में दो बार समुद्र में डूब कर अदृश्य हो जाता है। समुद्र का खारा जल इस शिवलिंग को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। यह मंदिर गुजरात के भरूच शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर सागर विस्तार के निकट जंबुसबुरता लुकालुका के नजदीक कावि, कंबोई गांव में स्थित है। इस मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग की ऊंचाई 4 फीट और व्यास 2 फीट है। इस शिवलिंग के चारों ओर तट पर मंदिर का निर्माण सातवीं सदी के आस-पास हुआ था। माना जाता है कि चावड़ी के संतों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया था। बाद में इस मंदिर का पुनर्निमाण आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा भी करवाया गया था। शिव महापुराण, स्कंद पुराण जैसे पौराणिक ग्रंथों में भी इस मंदिर के शिवलिंग का उल्लेख मिलता है।

मंदिर के दर्शन तभी संभव हैं, जब समुद्र में ज्वार कम हो और समुद्र का पानी तट से उतरने लगे। इस मंदिर के ओझल होने का कारण समुद्र में उठा ज्वार होता है। ज्वार के कारण पानी के उद्वेग के समय शिवलिंग पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है। मंदिर भी सागर की गहरी लहरों में समा जाता है। तब तट से भी मंदिर दिखना बंद हो जाता है। यहां आने वाले शिवभक्तों को प्रतिदिन के दर्शन के समय ज्वार की जानकारी दी जाती है, जिससे ज्वार-भाटे के समय की जानकारी रहने पर उन्हें किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। स्तंभेश्वर महादेव मंदिर में हर अमावस्या को मेला लगता है। प्रदोष, पूर्णिमा, एकादशी को यहां पूरी रात पूजा-अर्चना होती है। भगवान शिव के इस अद्भुत मंदिर में देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते रहते हैं।

- प्रभा पारीक

भारत में भी धूमधाम से मनाते हैं तिब्बती नव वर्ष लोसर फेस्टिवल

पर्व-संस्कृति
अंजू जैन

हम सब पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को और हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को नव वर्ष मनाते ही हैं। इनके अलावा कुछ प्रदेशों में तिब्बती नववर्ष लोसर भी मनाया जाता है। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

सुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को साकार होते देखने जैसा है तिब्बती नव वर्ष का भारत में धूमधाम से मनाया जाना। आज पूरी दुनिया में लोग एक-दूसरे के खान-पान, पहनावे और त्योहारों को अपना रहे हैं। भारत में पाश्चात्य नव वर्ष मनाया जाना तो बहुत सामान्य बात है लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि हमारे देश में तिब्बती नव वर्ष लोसर को भी धूमधाम से मनाया जाता है।

क्या है लोसर उत्सवः 'लोसर' दो तिब्बती शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें 'लो' का अर्थ 'नया' और 'सर' का अर्थ 'वर्ष' होता है, जिसका सामूहिक अर्थ 'नया साल' है। लोसर तिब्बत, नेपाल और भूटान का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध त्योहार है। हमारे देश में यह मुख्य रूप से सिक्किम, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में तिब्बती बौद्ध समुदाय एवं कुछ स्थानीय जनजातियों द्वारा मनाया जाता है। यह उत्सव जीवन के नवीनीकरण, समृद्धि और आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है।

सांस्कृतिक महत्वः लोसर उत्सव को हालांकि 'तिब्बती नव वर्ष' कहा जाता है, लेकिन इसकी जड़ें बौद्ध धर्म के आगमन से भी पुरानी हैं। यह मूलतः 'बोन' परंपरा का हिस्सा था, जहां लोग सर्दियों के अंत में प्रकृति को धन्यवाद देने के लिए धूप जलाते थे। बाद में, जब बौद्ध धर्म तिब्बत की मुख्य धारा बना, तो यह उत्सव आध्यात्मिक और धार्मिक रंगों में रंग गया। इस वर्ष लोसर 18 फरवरी, बुधवार को मनाया जाएगा। इसका मुख्य उत्सव आमतौर पर तीन दिनों तक चलता है, लेकिन यह त्योहार 15 दिनों तक मनाया जाता है।

साफ-सफाई का महत्वः लोसर में साफ-सफाई का खास महत्व है। सबसे पहले 'लाबा लोसर' मनाया जाता है, जिसमें घरों की पुताई और सफाई की जाती है। सभी पुरानी, अनुपयोगी वस्तुओं को हटा दिया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से घर में अच्छा स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि आती है। इस अवसर पर घरों को सजाया जाता है और नई प्रार्थना पताकाएं फहराई जाती हैं।

विशेष खान-पानः लोसर पर विशेष भोजन जैसे 'खप्से' (तले हुए बिस्कुट) और 'गुथुक' (एक प्रकार का नूडल सूप) तैयार किए जाते हैं। अमावस्या की पूर्व संध्या पर परिवार 'गुथुक' पीते हैं।

तीन दिनों तक विशेष कार्यक्रमः लोसर उत्सव के पहले दिन सूर्योदय से पहले ही मठों में शंखों की आवाज गूंजने लगती है। इस दिन लोग अपने धर्मगुरुओं का आशीर्वाद लेते हैं। देवताओं और आत्माओं के लिए धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, जिसमें घरों में घी के दीये जलाना और बौद्ध धर्मग्रंथों का पाठ करना शामिल है। दलाई लामा और अन्य उच्च लामाओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की जाती है। घरों में 'चेमार' (सत्तू और मक्खन का मिश्रण) का भोग लगाया जाता है।

दूसरा दिन 'ग्यालपो लोसर' (राजाओं का दिन) होता है। यह दिन सामुदायिक मिलन का होता है। ऐतिहासिक रूप से यह दिन शासकों और उनके मंत्रियों के बीच संवाद का होता था। आज के संदर्भ में, यह सार्वजनिक समारोहों, नाच-गाने और मेलों का दिन है। लद्दाख और धर्मशाला की सड़कों पर पारंपरिक पोशाक 'चूबा' पहने लोग एक-दूसरे को 'लोसर ताशी देलेक' (नए साल की शुभ मंगलकामनाएं) कहते हैं।

तीसरा दिन 'चो-क्योंग लोसर' (धर्म रक्षकों का दिन) है। इस दिन लोग पहाड़ की चोटियों पर जाकर 'धूप' (सांग) जलाते हैं और प्रार्थना झंडे (लुंगता) फहराते हैं। ये झंडे शांति, करुणा और शक्ति के प्रतीक हैं।

मुखौटा नृत्य (छम): लोसर उत्सव का सबसे रोमांचक पहलू मठों में होने वाला 'छम' या मुखौटा नृत्य है। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। रंगीन रेशमी कपड़े और भयानक दिखने वाले मुखौटे पहनकर लामा नृत्य करते हैं। ड्रम और लंबी झांझों की थाप पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों को एक अलग ही आध्यात्मिक दुनिया में ले जाता है। *

फैशन जोन
प्रतिमा अरोड़ा

बदलते मौसम के अनुसार हमारे ड्रेसिंग सेंस में बदलाव होने लगता है। यही वजह है कि इन दिनों यंगस्टर्स शर्ट और जैकेट के कॉम्बो यानी शैकेट पहनना काफी पसंद कर रहे हैं। इसकी क्या है खासियतें और यंगस्टर्स इन्हें क्यों पसंद करते हैं, इस बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

बदलते मौसम में परफेक्ट शैकेट से मिले स्मार्ट लुक

सर्दी का मौसम जैसे-जैसे विदा ले रहा है, मौसम हल्का गर्म होने लगा है, तो फैशन की दुनिया भी करवट ले रही है। भारी कोट, मोटे स्वेटर, अब वार्डरोब या अलमारियों में जाने लगे हैं। इनके स्थान पर हल्के स्टाइलिश और बहुपयोगी शर्ट+जैकेट या शैकेट का क्रेज दिनोंदिन बढ़ने लगा है। शैकेट वास्तव में शर्ट की आरामदेह संरचना और जैकेट की मजबूती का मिश्रण होता है। यह न तो पूरी तरह से शर्ट और न ही पूरी तरह से जैकेट बल्कि दोनों का संतुलित रूप होता है। इसीलिए यंगस्टर्स के बीच यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

इसलिए युवाओं को है पसंदः फरवरी और मार्च का महीना वासंती मौसम के महीने होते हैं। इस दौरान न ज्यादा ठंड और न ही ज्यादा गर्मी होती है। ऐसे समय में शैकेट युवाओं के लिए परफेक्ट विकल्प बनकर आता है। लेयरिंग में आसानी भी एक बड़ा कारण है कि यह तेजी से ट्रेंडी हो रहा है। दरअसल टी-शर्ट, फुलस्लीव शर्ट या पतली हुडी के ऊपर शैकेट पहनकर स्टाइलिश लुक मिल जाता है। इसे पहनने का एक फायदा यह भी है कि यह शरीर पर टाइटनेस के साथ चिपकता नहीं है। शरीर लंबे समय तक इसके साथ कंफर्टेबल रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह यूनिसेक्स अपील रखता है। यह लड़कों और लड़कियों दोनों पर समान रूप से सूट करता है। इसीलिए खासतौर पर कॉलेज गोइंग यंगस्टर्स को शैकेट बहुत पसंद आ रहा है। इसका फैब्रिक पतला होता है। यह फिट होता है लेकिन बहुत टाइट नहीं होता है। यह ठंड से बचाता है लेकिन बहुत गर्म अहसास नहीं कराता है। इसके बटन और सिलाई काफी मजबूत होती है। इसका वजन हल्का होता है ताकि लेयरिंग को आसान बनाए। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स इन्हें पहनना पसंद करते हैं। शैकेट का ट्रेंड सिर्फ अपने देश में ही नहीं पूरी दुनिया के युवाओं को भा रहा है, क्योंकि अगर फैशन इतिहास को देखें तो शैकेट की जड़ें वर्किंग मैन वियर और मिलिट्री क्लोदिंग से जुड़ी हुई हैं।

बनता है इन फैब्रिक्स सेः शैकेट आमतौर पर कॉटन ट्विल, डेनिम, कॉडरॉय और वूलेन मिश्रित फैब्रिक से बने होते हैं। हल्के वजन वाले कॉटन मिक्स शैकेट इस बदलते मौसम में ज्यादा पसंद किए जाते हैं। अगर थोड़ी ठंड महसूस हो तो वूलेन मिक्स्ड शैकेट आप वियर कर सकते हैं। वैसे तो आपको शैकेट्स में कलर्स की ढेरों वैरायटीज मिल जाएंगी। आप उनमें से अपनी पसंद का कोई कलर सेलेक्ट कर सकते हैं। लेकिन अगर शैकेट में कलर और पैटर्न ट्रेंड की बात करें तो ऑलिव ग्रीन, टैन ब्राउन, चारकोल ग्रे, डेनिम ब्लू कलर के शैकेट्स बहुत अट्रैक्टिव लगते हैं। अब यंगस्टर्स के बीच ब्राइट कलर वाले शैकेट्स के बजाय सॉफ्ट और अर्थी टोन वाले शैकेट्स की मांग ज्यादा बढ़ रही है, क्योंकि ये ज्यादा मैचिंग फ्रेंडली होते हैं। जहां तक शैकेट में ट्रेंडी पैटर्न और डिजाइन की बात है तो चेक्स प्रिंटेड और प्लेड पैटर्न यंगस्टर्स के बीच काफी पसंद किए जाते हैं।

लगातार बढ़ रही है डिमांडः हाल के सालों में बदलते मौसम में बाजार में शैकेट की लगातार मांग बढ़ रही है। क्योंकि कुछ वर्षों में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और लोकल ब्रांड ने अपनी नियमित क्लेक्शन में भी शैकेट को शामिल किया है। फैशन रिटेल से जुड़े जानकारों के मुताबिक यह ट्रांजिशनल वियर यानी बदलते मौसम के समय का फैशन हर साल 15 से 20 फीसदी तक वृद्धि हासिल कर लेता है। इसकी बढ़ती मांग का एक कारण यह है कि यह मीडियम रेंज में उपलब्ध होता है। वियर करने पर बहुत सोबर और एलीगेंट लुक देता है। इसके अगर बजट रेंज की बात करें तो शैकेट 800 से 1500 रुपए में मिल जाता है। मिड रेंज की बात करें तो 1500 से 3000 रुपए के बीच इसका रेंज देखा जा सकता है। जबकि प्रीमियम रेंज की बात करें तो 3000 रुपए से ऊपर आपको फाइन क्वालिटी के शैकेट मिल जाते हैं। इसकी यह रेंज दर्शाती है कि हर वर्ग के यंगस्टर्स के लिए शैकेट्स उपलब्ध हैं। यही कारण है कि अपने देश में इसकी डिमांड बदलते मौसम में बढ़ जाती है। इसकी मांग के पीछे एक कारण सस्टेनेबिल्टी भी है। कई ब्रांड अब रि-साइकिल्ड फैब्रिक और आर्गेनिक कॉटन से शैकेट बना रहे हैं। उससे पर्यावरण पर कम असर पड़ता है और युवावर्ग को यह सोच पसंद आती है कि वे स्टाइल के साथ-साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां भी पूरी कर रहे हैं।

पर्सनालिटी को देता है नया लुकः शैकेट की एक खासियत यह है कि यह तमाम दूसरे फैशन के साथ मर्ज नहीं हो रहा बल्कि एक अलग से पहचान बनाने में कामयाब है। आज के दौर में यंगस्टर्स फैशन को केवल कोई भी ड्रेस पहनने तक सीमित नहीं मानते बल्कि उससे अपने आराम और प्रभाव की तुलना करते हैं। शैकेट इन दोनों कसौटियों में खरा उतरता है। यही कारण है कि यह युवाओं को पसंद आता है। इनसे उन्हें स्मार्ट लुक मिलता है। *

फिल्म 'विधाता' में दिलीप कुमार-शम्मी कपूर

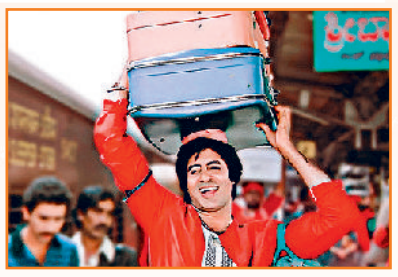
फिल्म 'कुली' के सीन में अमिताभ बच्चन

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का क्लाइमेक्स सीन

सिने ट्रेंड
अशोक वाधवाणी

रेल में सफर का अलग ही मजा होता है। देश के करोड़ों लोगों की लाइफलाइन से जुड़ी रेलगाड़ी को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूब दिखाया जाता रहा है। खास बात यह है कि फिल्मों में ट्रेन वाले सीन और सॉन्ग्स खूब पॉपुलर भी हुए हैं। यहां बात कुछ ऐसी ही फिल्मों की, जिनके टाइटल, सीन या सॉन्ग में ट्रेन मौजूद रही है।

फिल्मों में खूब हुए पॉपुलर ट्रेन बेस्ड सींस-सॉन्ग्स

अपने देश में आज भी अधिकांश लोगों के लिए रेल यात्रा सबसे सुविधाजनक और सस्ती मानी जाती है। यही वजह है कि हिंदी फिल्मों में भी मालगाड़ी से लेकर, यात्री गाड़ी और अत्याधुनिक ट्रेनें भी दिखाई जाती रही हैं। ट्रेन यात्रा से जुड़े दृश्य और गीत मन में अमिट छाप छोड़ते हैं। एंटरटेनमेंट के लिए रेल में रोमांस, रोमांच, रहस्य के अलावा रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म, रेल की पटरियां, कुली आदि बहुत कुछ हिंदी फिल्मों में दिखाए जाते रहे हैं।

ट्रेन से जुड़े फिल्मों के नामः बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनी हैं, जिनके टाइटल ट्रेन या रेलवे के इर्द-गिर्द रखे गए हैं। पुराने जमाने की नायिका नादिया की कई चर्चित फिल्मों के नाम ट्रेन के नाम पर ही रखे गए। उनमें से प्रमुख हैं 'मिस फ्रंटियर मेल'(1936), 'पंजाब मेल'(1939), 'दिल्ली एक्सप्रेस' (1949)। इसी क्रम में 'प्लेटफॉर्म' (1955), '27 डाउन' (1974), 'द ट्रेन' (1971), 'कुली' (1984), 'द बर्निंग ट्रेन' (1980), 'चेन्नई एक्सप्रेस' (2000) जैसी फिल्मों के टाइटल्स से ही पता चलता है कि फिल्म की कहानी रेल के इर्द-गिर्द घूमने वाली होगी।

फिल्मी दृश्यों में ट्रेनः बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनीं, जिनकी शुरुआत में ही रेल दिखाई गई, जैसे- दोस्त (1974)। कुछ फिल्मों का क्लाइमैक्स रेलवे स्टेशन पर फिल्माया गया है, जैसे- 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे'(1995)। इसके अलावा शाहरुख खान की कुछ और फिल्मों में भी ट्रेन की अपनी विशेष भूमिका रही है। 'दिल से', 'स्वदेश', 'वीर-जारा', 'रईस', 'पठान', 'जवान' आदि कई फिल्मों में लाजवाब रेल सीन फिल्माए गए हैं।

धर्मेंद्र का रेल कनेक्शनः पिछले वर्ष दिवंगत हुए सदाबहार अभिनेता धर्मेंद्र की शुरुआती फिल्में जैसे-'शोला और शबनम', 'आपकी परछाइयां', 'फूल और पत्थर' से लेकर 'दोस्त' आदि में रेल का रोल इंपॉर्टेंट रहा। दिलचस्प बात यह है कि धर्मेंद्र ने फिल्मों में आने से पहले कुछ समय तक रेलवे में क्लर्क की नौकरी भी की थी।

ट्रेन में फिल्माए गए कुछ यादगार दृश्यः फिल्मों में ट्रेन के कई ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं, जो यादगार बन गए। 'गांधी' (1982) में एक छोटा सा सीन है, जोकि गांधी जी के जीवन का टर्निंग पॉइंट बना। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन के फर्स्ट क्लास में यात्रा करने के कारण एक अंग्रेज, नाराज होकर, गांधीजी को एक स्टेशन पर सामान समेत डिब्बे के बाहर फेंक देता है। इसके अलावा इसी फिल्म में गांधीजी की ट्रेन से यात्रा के कुछ और सीन भी हैं। 'जब वी मेट' (2007) में फिल्म का नायक मुंबई से ट्रेन में चढ़ता है। रतलाम स्टेशन पर नायिका की ट्रेन छूटती है। आगे दोनों की ट्रेन जर्नी, रेल कर्मियों के साथ उनका वार्तालाप आदि कई रोचक, मनोरंजक दृश्य हैं। 'बड़े मियां, छोटे मियां' (1998) में अमिताभ बच्चन और गोविंदा ट्रेन की बोगी के सभी यात्रियों का सामान, चालाकी से लूट लेते हैं। कई कलाकारों ने फिल्म में रेल कर्मियों के रोल निभाए हैं। 'अजनबी' (1974) में राजेश खन्ना स्टेशन मास्टर बने हैं। 'विधाता' (1982) में दिलीप कुमार और शम्मी कपूर ट्रेन ड्राइवर बने हैं। ओम प्रकाश ने 'जूली' (1975) में ट्रेन ड्राइवर का रोल निभाया है।

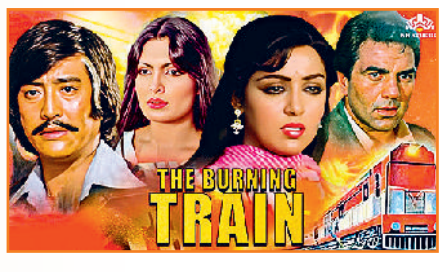

ट्रेन पर आधारित गीतः ट्रेन के भीतर, ट्रेन की छत पर या ट्रेन के इर्द-गिर्द कई फिल्मों के गीत भी फिल्माए गए हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' ट्रेन में फिल्माए गए फिल्म 'जागृति' (1954) के इस गाने में अध्यापक की भूमिका में अभि भट्टाचार्य, छात्रों को भारत देश के इतिहास से अवगत करवाते हैं। 'आशीर्वाद' (1968) में अशोक कुमार द्वारा गाया और उन्हीं पर फिल्माया रैप सांग 'रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक' बॉलीवुड का शुरुआती रैप सॉन्ग है। इसके कई रिमिक्स भी बन चुके हैं। 'दिल से' (1998) में एक नया, अनोखा प्रयोग किया गया था। फिल्म मे 'चल छैंया छैंया' गीत रेल के डिब्बों पर पिक्चराइज किया गया डांस सॉन्ग है। 'दोस्त' (1974) का गीत 'गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है...' आज भी लोकप्रिय है। फिल्म 'कुली' (1983) में अमिताभ बच्चन पर फिल्माए गए गीत 'सारी दुनिया का बोझ हम उठाते हैं' में भी ट्रेन और रेलवे प्लेटफॉर्म के दृश्य नजर आते हैं। इन लोकप्रिय गीतों के अलावा भी रेल में हर मूड, सिचुएशन के गानों, दृश्यों की लंबी लिस्ट है। *